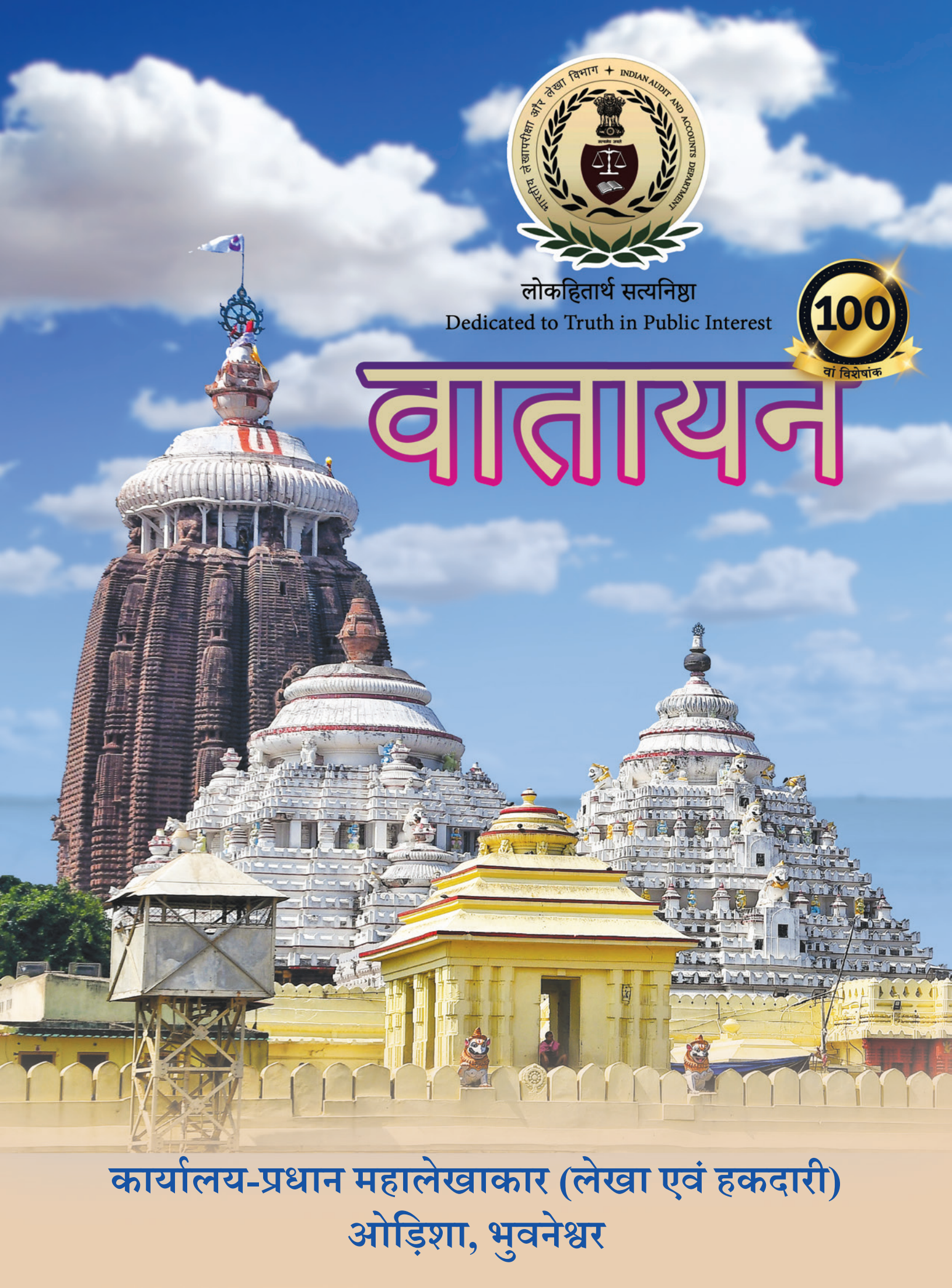
भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
सत्यमेव जयते
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest
100
वां विशेषांक
वातायन
कार्यालय-प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
ओड़िशा, भुवनेश्वर

वातायन के 99 वां अंक का विमोचन

दिनांक 4 फरवरी, 2021 को आयोजित कार्यालयीन राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक में महालेखाकार महोदय द्वारा वातायन के 99 वें अंक का विमोचन।

वातायन

सत्यमेव जयते

वर्ष 2020-21

(अक्टूबर, 2020 से मार्च, 2021)

अंक: 100 **अवधि-छमाही**

राजभाषा की सेवा में

कार्यालय-प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
ओड़िशा, भुवनेश्वर -751001

मुख पृष्ठ: श्री जगन्नाथ मंदिर, पुरी

वातायन पत्रिका परिवार

संरक्षक

श्री वी.एम.वी. नवल किशोर

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) ओड़िशा, भुवनेश्वर

प्रकाशन एवं मार्गदर्शन समिति

श्री दिनमणि मल्लिक
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

श्री श्रीराज अशोक
वरिष्ठ उप महालेखाकार (पेंशन)

संपादक

श्री यशवंत कुमार वर्मा
वरिष्ठ अनुवादक

सहयोग

श्री सुन्दर लाल साव, कनिष्ठ अनुवादक
श्री राजेश कुमार कटरे, कनिष्ठ अनुवादक
कुमारी बबिता मणि, कनिष्ठ अनुवादक

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रचनाकारों के व्यक्तिगत विचार व भावनाएं हैं कार्यालय व संपादक मंडल का रचनाकारों के विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वातायन

संरक्षक का संदेश

यह हर्ष की बात है कि इस कार्यालय की अर्धवार्षिक पत्रिका वातायन के 100 वें अंक का विमोचन किया जा रहा है और गर्व का विषय भी है कि इस अंक को विमोचन करने का मुझे सुअवसर प्राप्त हुआ। यह बात सत्य है कि जितनी लंबी यात्रा होती है उतनी ही अधिक चुनौतियाँ आती है और वही सफल होता है जो इन बाधाओं से जूझता है। इस पत्रिका के ऐतिहासिक सफर में कार्यालयीन कर्मचारियों का समर्पण और निष्ठा सराहनीय है। यह अंक वातायन के इतिहास में एक उत्सव के रुप में आया है, हम सबको इस अवसर में पुरे आत्मीयता के साथ जुड़ना है।

रचना या लेख समाज का दर्पण होता है तथा भाव-अभिव्यक्ति का उचित माध्यम भी है जो रचनाकार के गुणों को तराशता है। मुझे खुशी है कि इस कार्यालय के कर्मी गण संघ सरकार की राजभाषा में अपनी ज्ञान और गुणों का प्रसार कर रहे है।

मुझे विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक राजभाषा के प्रचार-प्रसार में एक मील का पत्थर साबित होगा।

मैं पुनः इस 100वें विशेषांक के संपादक मंडल सहित सभी रचनाकारों को बधाई देते हुए पत्रिका के निरंतर प्रकाशन हेतु शुभकामना प्रकट करता हूँ।

वी.एम.वी नवल किशोर
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)

संदेश

कार्यालयीन अर्धवार्षिक पत्रिका वातायन का 100वाँ विशेषांक प्रकाशित हो रहा है यह अत्यंत ही प्रसन्नता की बात है। बड़ी लंबी समय से यह पत्रिका हमारी राजभाषा हिंदी की प्रगति में एक अहम भूमिका निभा रही है।

कार्यालय के स्टॉफ सदस्यों में हिंदी के प्रति जो लगाव है वो इस पत्रिका के माध्यम से स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होता है। यह पत्रिका राजभाषा हिंदी को एक नई उँचाईयों तक ले जाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। हमारा कार्यालय "ग" क्षेत्र में स्थित होने के बावजूद भी यहां के स्टॉफ सदस्यों द्वारा इस पत्रिका हेतु बढ़-चढ़कर लिखी जाने वाली रचनाओं को देखकर ह्दय प्रफुल्लित हो उठता है।

अंत में पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति की कामना करते हुए मैं सभी रचनाकारों को उनके उत्कृष्ट लेख के लिए साधुवाद एवं पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई देता हूँ।

दिनमणि मल्लिक
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

संपादक की कलम से

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) की अर्धवार्षिक ई-पत्रिका वातायन के 100वें विशेंषांक को आपके समक्ष सौंपते हुए मुझे खुशी हो रही है। इस पत्रिका ने अपने ऐतिहासिक सफर में कई सफलताएँ हासिल की है तथा हिन्दी के क्षेत्र में कार्यालय की एक नयी पहचान बनायी है। निश्चित रुप में इस कार्यालय के अध्यक्ष/प्रमुखों की भूमिका वंदनीय है तो साथ ही अधिकारी/कर्मचारी गण का प्रयास भी विशेष रुप से सराहनीय है।

मैनें अनुभव किया है कि ग क्षेत्र में स्थित कार्यालय के लिए हिन्दी में पत्रिका प्रकाशन करने में कई चुनौतियां आती है। इस पत्रिका ने भी ऐसे कई चुनौतियों का सामना किया तथा हर बार निखर कर सामने आया है। कार्यालयीन पत्रिका कार्यालय के स्तर को दर्शाता है तथा रचनाकारों को अपनी रचनाधर्मिता प्रकट करने के लिए एक मंच प्रदान करता है। ज्ञान और अनुभव के प्रसार का माध्यम बनते हुए यह पत्रिका राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्य की पूर्ति भी करता है।

राष्ट्र के विकास में भाषा को एक स्तंभ माना गया है क्योंकि भाषा की एकरुपता जन-जन को एक सूत्र में पिरोती है। यह सभी परिप्रेक्षों में उपयुक्त बैठती है इसीलिए संविधान में हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया गया। आवश्यक है इनको अपने दैनिक जीवन में अंगीकार करते हुए अधिकाधिक प्रयोग करें ताकि हिन्दी का व्यापक प्रसार हो सके।

पूर्व अंक के लिए भेजे गए आपके बहुमूल्य सुझाव हेतु मैं आभार प्रकट करता हूँ तथा इस विशेषांक के लिए भी यही अपेक्षा करता हूँ। संपादक मंडली सहित समस्त रचनाकारों को कोटिशः बधाई।

"राजभाषा का सम्मान, राष्ट्र का सम्मान"

सधन्यवाद।

यशवंत वर्मा
वरिष्ठ अनुवादक

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	रचना	रचनाकार	पृष्ठ
1	महालेखाकार का संदेश		
2	वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) का संदेश		
3	संपादकीय		
	गद्य विभाग		
1.	बाकी	श्री दिनमणि मल्लिक, वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)	1
2.	हिन्दी और भारतीय भाषाएं	डॉ. संजय जायसवाल (अतिथि रचनाकार)	3
3.	ब्रह्माण्ड "एक विचारशील तत्व"	श्री यशवंत कुमार वर्मा, वरिष्ठ अनुवादक	8
4.	सच मत मान लेना	श्री दीपक यादव, सहा. लेखा अधिकारी	10
5.	बरगद का भूत	श्री आलोक कुमार, डीईओ	14
6.	रिश्तों की गहराई	श्री संजीव दुबे, डीईओ	18
7.	दहेज प्रथा	सुश्री सोनी कुमारी साव, डीईओ	20
8.	मेहनत का फल	श्री बीर किशोर जेना, एमटीएस	23
9.	जिम्मेदारी और मनमीत	श्री राजेश कुमार कटरे, कनिष्ठ अनुवादक	24
10.	अनियंत्रित मानव मस्तिष्क का परिणाम	कुमारी बबिता मणि, कनिष्ठ अनुवादक	29
11.	अंतिम फैसला	श्रीमती शांतिलता सेठी, पर्यवेक्षक	33
12.	मृत्युभोज की तार्किकता	श्री रवि जायसवाल, लेखाकार	36
13.	मातृभाषा की अस्मिता	श्री सुंदर लाल साव, कनिष्ठ अनुवादक	40
	पद्य विभाग		
1.	पुत्र प्यारे सुन जरा	श्री राम किशोर शर्मा (अतिथि रचनाकार)	42
2.	हकीकत	श्री पुरूषोत्तम नंद, सहा. लेखा अधिकारी	43
3.	सब्र का बाँध	श्री रवि कुमार, सहा. लेखा अधिकारी	44
	विविधा		
1	कार्यालय समाचार		45
2	पाठकों की पाती		49

बाकी

श्री दिनमणि मल्लिक
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

कोविड पाबंदी की वजह से सूर्यनारायण बाबू के एकादशहा भोजी अत्यंत सादगी से आयोजित किया गया था। पारिवारिक परिजनों के अलावा थोड़े बहुत करीबी दोस्तों, दफ्तर में करीब रहकर साथ में काम करने वाला एमटीएस भुवन एवं ड्राइवर प्रताप ऐसे ही पंद्रह- बीस लोगों को निमंत्रित किया गया था।

उनके सरकारी आवास के सामने तम्बू लगाकर पंक्ति भोज का आयोजन किया गया था। उसी तम्बू के नीचे एक तख्ती पर सूर्यनारायण बाबू का एक चित्र एवं पास में कुछ फूल, पंखुड़ियाँ श्रद्धांजली अर्पित करने के लिए रखा गया था।

पंक्ति भोजन शुरू हो जाने के बावजूद भी प्रताप चुपचाप बैठा था। लग रहा था वह किसी बात को लेकर दुविधा में है। उसे किसी-किसी ने एक दो बार भोजन के लिए बुलाया भी। थोड़ी देर बाद कहकर वह टाल गया और पहले की तरह बैठा रहा। बाहर के लोगों के विदा हो जाने के बाद सूर्यनारायण बाबू की बेटी ने उसे बुलाया, "प्रताप भाई आओ अब। दिल को और कब तक दुखाएंगे, ईश्वर की जो मर्ज़ी उसे हम सबको स्वीकार करना ही पड़ेगा। हम भी भला क्या कर पाएंगे?"

प्रताप ने कहा " मैं जरा माँ से मिल सकता हूँ, दीदी ? " सूर्यनारायण की पत्नी सरोज देवी पति के देहांत के बाद टूट चुकी थी। पति के बारे में हमेशा सोच-सोच कर ज्यादातर समय शोकाकुल रहती थी। माँ को देख कर प्रताप ने प्रणाम किया। सरोज देवी ने भी नमस्कार किया और पूछा "तुमने खाना खाया, प्रताप ? " नहीं माँ", प्रताप ने जवाब दिया। "एक बात बताऊँ माँ, सर के ऊपर मेरे बाइस रुपये बाकी रह गए हैं। आफिस से लौटते वक्त मुझे एक पैकेट ओमफेड दूध लाने को कहे थे। लेकिन पैसे नहीं दे पाए थे सर।"

सरोज देवी पल भर के लिए विस्मित हो गई। फिर तुरंत उनके चेहरे पर हल्की मुस्कुराहट आ गई। उसने उठकर खुद की वैनिटी बैग ले आई और उसमें से बाइस रुपये निकालकर प्रताप को दे दिए। पैसे पक-ड़कर प्रताप माँ को पुनः एक बार प्रणाम कर बाहर निकल आया। हाथ में पकड़े हुए उन पैसों के साथ कुछ फूल लेकर प्रताप सूर्यनारायण बाबू के चित्र के सामने हाथ जोड़कर खड़ा रहा। कुछ देर बाद चित्र के पास पुष्पांजलि अर्पित करते हुए पैसे और फूल रख कर प्रणाम किया। उसके बाद, पैसे उठाकर जतन से अपनी जेब में रखा और भोजन के लिए आसन पर बैठ गया।

सरोज देवी प्रताप के बारे में सोच रही थी। वह प्रताप के व्यवहार से खुश और आश्चर्यचकित दोनो हो रही थी। उम्र वैसे कुछ ज्यादा नहीं है उसका सम्पर्क भी ज्यादा दिनों का नहीं था। लगभग डेढ़ वर्ष पहले पति की तबादली से ऑफिस आने के बाद प्रताप का संपर्क एक ड्राईवर के रुप में हुआ था। लेकिन सचमुच वह कितने सरल और निष्ठावान के रुप में अपने दिवंगत सर को समझ लिया था।

उनके पति कभी-कभी छोटी-छोटी बातें भूल जाया करते थे। इसलिए ऑफिस से लौटने के बाद कई बार नाश्ता पानी देते वक्त प्रताप से पूछ लेती थी, " तुम्हारे सर बहुत भुलक्कड़ हैं, कुछ सामान वगैरह लाने को बोलें तो पैसे मांग लेना।"

प्रताप हँसते हुए कहता था, "नहीं माँ, सर सब दे देते हैं। सर तो अक्सर कहा करते हैं कि उनके पैसे मेरे उपर रह जाने से चलेगा, लेकिन मेरे पैसे उनके उपर कभी न रहे।

हिंदी और भारतीय भाषाओं पर बढ़ता अंग्रेजी का वर्चस्व : प्रतिरोध और संभावनाएँ

डॉ. संजय जायसवाल
सहायक प्रोफेसर (हिंदी विभाग)
विद्यासागर विश्वविद्यालय
मिदनापुर, पश्चिम बंगाल

आज हिंदी विश्व की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में भले ही दूसरे स्थान पर काबिज हो, पर वहीं देश के भीतर ही हिंदी और तमाम भारतीय भाषाओं के अंग्रेजी भाषा और संस्कृति के बढ़ते प्रभाव के कारण कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। अंग्रेजी ज्ञान की नहीं बल्कि साम्राज्यवाद की भाषा है, इस तथ्य को समझने में हमें काफी समय लग गया। पहले अंग्रेजों का लक्ष्य था राजनीतिक साम्राज्यवाद का विस्तार पर अब भाषा के जरिए सांस्कृतिक-साम्राज्यवाद का विस्तार किया जा रहा है, जो देखने में आकर्षक है, पर घातक ज्यादा है। मेरे इस आलेख में अंग्रेजी के बढ़ते वर्चस्व के प्रभाव को चिह्नित करने का प्रयास है साथ ही हिंदी और भारतीय भाषाओं की संभावनाओं पर विचार करते हुए, कैसे प्रतिरोध खड़ा किया जा सकता है, आदि पहलुओं पर चर्चा की गई है।

भारत एक बहुभाषी, बहु-संस्कृतियों वाला मुल्क है। संस्कृति, धर्म, देवता, भाषा, मान्यताओं, खान-पान हर दृष्टि से इस देश का चरित्र बहुलतावादी है। यहाँ की सभी भाषाएँ किसी न किसी की मातृभाषा हैं और वे सभी सम्मानीय भी हैं। मुझे लगता है कि अंग्रेजी शायद ही इस देश में किसी की मातृभाषा हो, बावजूद इसके वह सभी मातृ भाषाओं के सामने एक बड़ी चुनौती है। वह सभी मातृ भाषाओं को अपदस्थ करने की कोशिश कर रही है, अगर ऐसा हुआ तो इसके परिणाम बहुत दूरगामी होंगे। पहले भी वह भारतीय संस्कृति और चिंतन पर प्रहार कर रही थी और आगे भी करेगी। भाषा पर प्रहार महज भाषा पर प्रहार नहीं है बल्कि सभ्यता और जाति पर भी है। इस संदर्भ में आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने नागरी प्रचारिणी पत्रिका में लिखा --"भाषा ही किसी जाति की सभ्यता को सबसे अलग झलकाती है, यही उसके हृदय के भीतरी पुर्जों का पता देती है। किसी जाति को अशक्त करने का सबसे सहज उपाय उसकी भाषा को नष्ट करना है।" (जनवरी 1912, 'भाषा की शक्ति') यानी शुक्ल भाषा की संप्रभुता को जरूरी मानते हैं।

हम इस सच को अस्वीकार नहीं कर सकते कि भाषा की पराधीनता से या मिटने से हमारी पहचान खत्म हो जाएगी। आपको जानकर हैरत होगी कि आज से दस हजार वर्ष पहले जब दुनिया की आबादी महज दस लाख थी तो भाषाओं की संख्या लगभग 15 हजार थी। आज जब दुनिया की आबादी कई अरब बढ़ गई है तो भाषाओं की संख्या घटकर 6 से 7 हजार हो गई है और आशंका यह भी जतायी जा रही है कि अगली शताब्दी तक यह संख्या मात्र 600 के आस-पास रह जाएगी। हम भारत के ही संदर्भ में देख

सकते हैं कि 1961 की जनगणना में लोगों ने 1652 भाषाओं को अपनी मातृभाषा के रूप में दर्ज कराया था, जिसमें से 204 भाषाएँ ऐसी थीं जिनके बोलने वाले 10 हजार से करोड़ों तक थे। 977 भाषाएँ ऐसी थीं जिनके बोलने वालों की संख्या दस से दस हजार तक थी और 471 ऐसी थीं जिनके बोलने वालों की संख्या दस या उससे कम थी।

इस तथ्य का जिक्र इसलिए जरूरी है कि भाषाएँ हमारे होने की प्रमाण हैं, आज हम अगर अपनी भाषा में नहीं जी पा रहे हैं तो इसका मतलब है कि भाषाई पराधीनता का शिकार हो रहे हैं। इस संदर्भ में प्रेमचंद ने बड़ी अच्छी बात कही है --"अंग्रेजी भाषा हमारी पराधीनता की वही बेड़ी है, जिसने हमारे मन और बुद्धि को ऐसा जकड़ रखा कि इनमें इच्छा भी नहीं रही। हमारा शिक्षित समाज इस बेड़ी को गले का हार समझने पर मजबूर है।"

प्रेमचंद के इस कथन का तात्पर्य यह है कि अधिकांश लोगों की यह मान्यता रही है कि अंग्रेजी ज्ञान, विज्ञान, प्रगति, विश्व-एकता यानी वैश्विक-विकास की भाषा है। जबकि सच यह है कि अंग्रेजी पराधीनता की भाषा रही है। भारतीय भाषाओं को खासकर हिंदी को लेकर अंग्रेजों की धारणा अच्छी नहीं रही है। प्रो. गिलक्राइस्ट ने 'हिंदी को गँवारू और हिंदुओं की भाषा मानी। यानी के भारतीयों को असभ्य और हिंदी को हिंदुओं की भाषा कहकर सांप्रदायिक भेद पैदा कर रहे थे। इतना ही नहीं 1835 में लार्ड मैकाले ने अंग्रेजी को प्रभुत्व की भाषा, सत्ता की भाषा मानते हुए कहा --"हमें भारत में इस तरह की एक श्रेणी पैदा करने का भरसक प्रयास करना चाहिए जो कि हमारे और करोड़ों भारतवासियों के बीच जिन पर हम शासन करते हैं, समझाने-बुझाने का काम करे। ये लोग ऐसे होने चाहिए, जो केवल रक्त और रंग की दृष्टि से हिंदुस्तानी हों, किंतु जो अपनी रुचि, भाषा और विचारों की दृष्टि से अंग्रेज हों।"

हिंदी भाषा पर अंग्रेजी का बढ़ता वर्चस्व कोई नया प्रश्न नहीं है। यह कितना अजीब है कि फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना के साथ ही भारत में हिंदी के विकास का काम शुरू होता है और वह भी अंग्रेजी भाषा और संस्था के माध्यम से यह सिलसिला आज भी जारी है। क्योंकि हम औपनिवेशिक मानसिकता से उबर नहीं पाए हैं। हमारा जो बौद्धिक उपनिवेशन लार्ड मैकाले ने किया, वह आज भी हमारे भीतर बचा है। तभी तो एक बड़ा वर्ग आज भी मानता है कि आधुनिकता का अर्थ अंग्रेजी है, अंग्रेजी का अर्थ प्रगति है। जबकि सच्चाई यह है कि भारत में मात्र 2 से 3% लोग अंग्रेजी में दक्ष हैं, 20-22% सप्रयास अंग्रेजी का प्रयोग करते हैं जबकि बाकी 75% लोग अपनी भाषाओं में काम-काज करते हैं।

गौरतलब है कि महज 2 से 3% वाली भाषा में दक्ष लोगों का पूरे देश में अपना वर्चस्व कायम है। ऐसे में जरूरी है कि उन कारणों की तलाश हो, जिसके कारण ऐसा हो रहा है। इस संदर्भ में भारतेंदु का कथन ज्यादा प्रासंगिक है जब वे निज भाषा को जातीय स्वाभिमान से जोड़ते हुए कहते हैं –

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति के मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय के शूल।।"

वे देशी भाषा को प्रगति का माध्यम मानते हैं। जबकि सच यह है कि हमारे देश का बड़ा हिस्सा अपनी भाषा के वैशिष्ट्यों से अंजान होकर जातीय स्वाभिमान के मूल्यों से कोसों दूर है। भारतेंदु की तरह रामविलास शर्मा भी जातीय भाषाओं को अंग्रेजी के विकल्प के रूप में देखते हैं। उनका मानना है कि भारत में साम्राज्यवाद तब तक है जब तक हम आर्थिक दबाव से मुक्त नहीं हो जाते हैं। अत: राजनीतिक स्वाधीनता के लिए स्वदेशी व्यापार और पूंजी की जरूरत है। ठीक उसी तरह साम्राज्यवाद के सांस्कृतिक पक्ष से टकराने के लिए जरूरी है, स्वभाषा यानी स्वदेशी भाषा का प्रयोग करना होगा। जरूरत पड़ने पर एक नहीं 5 देशी भाषाओं में काम चलाएँ। अधिक भाषाओं को राजभाषा का दर्जा देकर अंग्रेजी के दबाव से देशी भाषाओं को मुक्त करें। ऐसा करने से हम भारतीय भाषाओं को एक मंच पर ला पाएंगे और मिलकर अंग्रेजी भाषा के खिलाफ प्रतिरोध भी खड़ा कर पायेंगे।

यह सर्वविदित है कि भाषा विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम मात्र नहीं है। बल्कि यह हमारी भावनाओं की अभिव्यक्ति और संस्कृति की संरक्षिका भी है। भाषा हमारे पहचान की आधार है। इस तथ्य का ज्ञान हमारे लिए जरूरी है और हम ऐसा तभी कर पाएंगे जब भाषा के प्रति प्रेम का भाव होगा, जातीय स्वाभिमान से परिचित होंगे। यह हमारे देश का दुर्भाग्य है कि हम अपनी भाषाओं को लेकर लड़ रहे हैं, उसे कमजोर कर रहे हैं। आज अंग्रेजी वैश्विक भाषा बनकर ज्यादा शक्तिशाली हो गई है। अब तकनीक, व्यापार, विश्व बैंक आदि लगभग सभी क्षेत्रों में इस भाषा का दखल बढ़ता जा रहा है। यह अंग्रेजों के राजनीतिक साम्राज्यवाद से ज्यादा क्षिप्त, वेगवान और मारक है। जो हमारी संस्कृति, जीवन-शैली, सोच आदि पर गहरा प्रभाव छोड़ रही है।

भूमंडलीकरण, सूचनाक्रांति के इस दौर में मीडिया, बाजार और विज्ञापनों के दबाव में हिंदी को हिंग्लिश बनाने का प्रयास किया जा रहा है। लगभग यही हाल अन्य भारतीय भाषाओं का भी है। विश्व-स्तर पर भारतीय लेखकों की जो पहचान बन रही है, उसमें से अधिकांश लोग अंग्रेजी भाषा में लिखने वाले लेखकों का है। झुम्पा लाहिड़ी, अरूधंती राय, चेतन भगत, अरविंद अडिगा, शोभा डे आदि को वैश्विक जगत में ज्यादा लोकप्रियता मिली है, वजह है अंग्रेजी-भाषा में लेखन।

अंग्रेजी भाषा की वजह से सांस्कृतिक और इतिहास विस्मृति का संकट पैदा हो रहा है। आने वाली पीढ़ी महात्मा गांधी के बजाए एम. जी रोड, भीमराव अंबेडकर की जगह बी.आर.ए. रोड, जगदीश चंद्र बसु रोड की जगह ए.जे.सी. बोस रोड का प्रयोग कर रही है। यहाँ गौर करने वाली बात यह है कि इस तरह की संक्षिप्तीकरण के कारण हम जातीय, मिथकीय और पौराणिक नायकों के असली पहचान एवं नामों से अपनी पीढ़ी को दूर कर रहे हैं। ऐसे में स्वाभाविक स्थिति यह है कि जातीय, ऐतिहासिक मूल्यों को हम सिर्फ अपनी भाषा में बनाए एवं बचाए रख पाएंगे।

महात्मा गांधी विदेशी भाषा (अंग्रेजी भाषा) के बढ़ते प्रभाव को राष्ट्र, समाज और नयी पीढ़ी के लिए घातक मानते हैं। वे कहते हैं –''विदेशी शासन के अनेक दोषों में देश के नौजवानों पर डाला गया विदेशी भाषा के माध्यम का घातक बोझ इतिहास में एक सबसे बड़ा दोष माना जाएगा, इस माध्यम ने राष्ट्र की

शक्ति हर ली है, विद्यार्थियों की आयु घटा दी है, उन्हें आम जनता से दूर कर दिया है और शिक्षण को बिना कारण खर्चीला बना दिया है। अगर यह प्रक्रिया अब भी जारी रही तो जान पड़ता है वह राष्ट्र की आत्मा को नष्ट कर देगी। इसलिए शिक्षित भारतीय जितनी जल्दी विदेशी माध्यम के भयंकर वशीकरण से बाहर निकल जाए उतना ही उनका और जनता का लाभ होगा। गांधी जी की यह आशंका आज सच बनकर सामने खड़ी है। कुकुरमुत्ते की तरह अंग्रेजी माध्यम के स्कूल खुल रहे हैं, शिक्षा महँगी हो गई है। आज मध्यवर्गीय समाज की मानसिकता में बदलाव लाना जरूरी है जो अंग्रेजी को विकास की भाषा और हिंदी को पिछड़ेपन की भाषा कहता है। इसलिए 90% अंग्रेजी माध्यम विद्यालय सिर्फ मध्यवर्गीय भारतीय मानस की मानसिकता को कैश करना चाहते हैं और शिक्षा के नाम पर दिखावा, अधकचरापन, वैश्विक संस्कृति के अनुकरण की प्रवृत्ति सौंप रहे हैं। 'जो लुक ग्लोबल एक्ट लोकल' की सच्चाई के साथ साथ दिख रहा है। कारपोरेट जगत ऐसे प्रलोभनों से मातृ भाषा में पढ़ने वाले छात्रों के भीतर हीन-भावना को भर रहे हैं, जिसका परिणाम छात्रों की संख्या पर दिख रहा है। पिछले दशक से हिंदी में महज 24% छात्रों की संख्या बढ़ी जबकि अंग्रेजी माध्यम में 74%। आज आंध्रप्रदेश, तमिलनाडू, महाराष्ट्र में 60% छात्र अंग्रेजी माध्यम में पढ़ रहे हैं। यानी पूरे देश में कुल जनसंख्या के महज एक करोड़ बच्चे अंग्रेजी माध्यम में पढ़ रहे हैं। पर उनका वर्चस्व पूरे देश के मानस पर देखा जा सकता है।

आज भाषा अज्ञानता, सांस्कृतिक अज्ञानता, जातीय बोध से पृथकता आदि ऐसे कारक हैं जो हमें दिखावे की ओर प्रवृत्त करते हैं। मौलिकता का अभाव व्यक्ति को नकलची बना देता है। अत: हमें अंग्रेजी भाषा की नकल के बजाय अपनी भाषा में मौलिकता का दामन थामकर आगे बढ़ना होगा। हमें भाषा को लेकर जातीय-गर्व का अनुभव करना चाहिए, दरअसल यही गर्वबोध हमें गौरवशाली परंपरा, संस्कृति और समृद्धि से जोड़ता है। हमें अपनी भाषा को लेकर एक सकारात्मक सोच विकसित करने की जरूरत है। कुछ लोगों का मानना है कि हिंदी की शब्द-क्षमता कम है तथा वैज्ञानिक शब्दावली का अभाव है। यह तथ्य पूरा सच नहीं है, क्योंकि कोश विज्ञानी डॉ. रघुवीर ने हिंदी की शब्द-संपदा को समृद्ध बताया है – फ्रेंच, अंग्रेजी, जर्मन, रूसी आदि भाषाओं के सारे शब्दों के लिए कम से कम पाँच पर्याय प्रस्तुत कर सकते हैं। एक धातु से दो सौ से अधिक शब्द बनाए जा सकते हैं। हिंदी में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग ने लगभग प्रत्येक विषय पर अखिल भारतीय शब्दावलियाँ प्रकाशित की हैं, जिनमें लाखों शब्द हैं। कंप्यूटर विज्ञान जैसे आधुनिक विषय पर आयोग ने दस हजार शब्दों की 'कंप्यूटर विज्ञान शब्दावली' प्रकाशित की है।

हालांकि जिन लोगों की धारणा यह है कि अंग्रेजी ज्ञान की भाषा है, मैं उनसे जानना चाहता हूँ कि क्या बाकी भाषाएँ अज्ञान की भाषा हैं। दरअसल सच यह है कि सत्ता की भाषा हमेशा जनभाषा को हेय दृष्टि से देखती है। जबकि सच यह है कि हिंदी विज्ञान लेखन और ज्ञान की भी भाषा है। 1855 में कुंज बिहारी लाल की पुस्तक 'लघु त्रिकोणमिति', 1873 में महेंद्र भट्टाचार्य की पुस्तक 'पदार्थ-विज्ञान', आदित्य भट्टाचार्य की 'बीजगणित' के अलावा 'क्षेत्रमिति प्रकाश', 'विज्ञान विटप', 'चिकित्सा शास्त्र', 'पशु चिकित्सा', 'कैल्कुलस', 'स्टैटिक्स', 'डयनामिक्स', 'वनस्पतिशास्त्र', 'अभियांत्रिकी', 'वैद्युत शब्दावली', 'भौतिकी',

'बीज ज्यामिति', 'औषधि विज्ञान' आदि ज्ञान-विज्ञान की पुस्तकों का लेखन हिंदी भाषा में हुआ। साथ ही अखिल भारतीय तकनीकी शब्दावली आयोग का गठन 1960 में किया गया, इसके द्वारा लगभग सभी वैज्ञानिक विषयों पर शब्दावलियाँ प्रकाशित हुई। 1990 में प्रकाशन एवं सूचना निदेशालय द्वारा हिंदी में विज्ञान व तकनीकी की लगभग 6749 पुस्तकों की प्रविष्टियाँ हैं जो भारत की आबादी की दृष्टि से काफी कम हैं। हिंदी में दर्जनों वैज्ञानिक पत्रिकाओं का प्रकाशन होता है।

अत: हमें एक ओर अंग्रेजी के बढ़ते प्रभाव पर अंकुश लगाने की जरूरत है तो दूसरी ओर हिंदी को ज्ञान-विज्ञान एवं वैश्विक संवाद की भाषा के रूप में विकसित करने के लिए हिंदी में मौलिक लेखन को प्रोत्साहित करने की जरूरत है। भक्तिकाल के लोकजागरण से लेकर आधुनिक काल के नवजागरण तक हिंदी ने पूरे राष्ट्र को सांस्कृतिक एकता का मंच प्रदान किया। आज हिंदी को शिक्षा, स्वास्थ्य, विज्ञान, तकनीकी आदि विषयों में पर्याप्त लेखन की संभावना को ध्यान में रखते हुए प्रोत्साहन और संरक्षण देने की जरूरत है, साथ ही तमाम भारतीय भाषाओं के साथ मिलकर हिंदी को आगे बढ़ना है, तभी हिंदी का वास्तविक विकास संभव है।

ब्रह्मांड एक विचारशील तत्व

श्री यशवंत कुमार वर्मा
वरिष्ठ अनुवादक

हम सबने कभी यह अनुभव किया है जब हम कोई बात सोच रहे होते हैं तभी उसी क्षण वो बात या घटना हो जाती है और हम उसे एक महज इत्तेफाक मानकर उसके सत्यता से किनारा कर लेते है।

सत्य यह है कि वो बात या घटना की पठकथा पहले से ही उस विशाल ब्रम्हांड में मौजूद है जिससे हम सबकी उत्पत्ति हुई है। हमारा मन कोई बात उत्पन्न नही करता वो तो सिर्फ सूचना को स्वीकार करता है जो पहले से मौजूद है। महान वैज्ञानिक आइंसटीन, न्यूटन, गैलिलियो के पैदा होने के बाद ही भौतिक का सिध्दांत उत्पन्न हुआ यह मानना बचपना होगी। विश्व में कोई भी अविष्कार नहीं करता वो केवल सत्य की खोज (उजागर) करता है जो ब्रम्हांड में अनंत अनादि काल से मौजूद है।

अब मन में विचार आना स्वभाविक है कि ऐसे विचार उसे ही क्यों आया? हमें क्यों नही? एक रेडियो ट्रांसमिटर का उदाहरण इस परिस्थिति पर उपयुक्त बैठता है। जिस प्रकार रेडियो वही कार्यक्रम को प्रस्तुत करता है जिसकी आवृत्ति रेडियो के साथ मिलती हो जबकि वातावरण में कई तरंगे विद्यमान है। ऐसे ही जब किसी की विचार की आवृत्ति ब्रम्हांड में विद्यमान किसी सिद्धांत से मेल खाता है तो तब भौतिकीकरण होता है। इस विचार को कोई भी ग्रहण कर सकता है क्योंकि हम सबकी भौतिक संरचना एक समान है। न्यूटन था इसलिए ' गुरुत्वाकर्षण नियम ' की उत्पत्ति नहीं हुई बल्कि ' गुरुत्वाकर्षण नियम ' के सिद्धांत को उस विशाल विचारशील तत्व से आकर्षित किया तभी वे न्यूटन कहलाए।

ब्रम्हांड असीमित उर्जा का स्त्रोत है जो हर जगह एक समान रुप से तरंग के रुप में विद्यमान है। यह तरंगे हमारे विचारों को प्रभावित कर जीवन के उतार-चढ़ाव का कारण बनती है। पृथ्वी के उत्पत्ति के साथ विकास का भी मूलभूत स्त्रोत उर्जा है। वैज्ञानिको ने भी यह माना है कि पहले उर्जा केवल एक बिन्दु के रुप में केन्द्रीत थी फिर उनका प्रसार होते गया, जीव की उत्पत्ति शुरु हुई, मानव मन में विचारों का संप्रेषण हुआ और यह धरती का स्वरुप बदलते चला गया। हम आज जो भी चीजे देखते है वो किसी की विचारों का प्रतिरुप है क्योंकि एक अभियंता भी विशाल पुल बनाने के पहले विचारों से मानसीक पुल तैयार करता है तब जाके उनका वास्तविक स्वरुप सामने आता है। इसका अर्थ है कि ब्रम्हांड भी किसी के विचारों की उपज है, लेकिन अभी किसी मानव का विचार उस सिध्दांत से एकाकार नहीं हुआ है जिससे यह सत्य सामने आ सके। कुछ धर्मगुरुओं एवं लेखकों ने यह संकेत दिये है परंतु विज्ञान की मुहर लग पाना शेष है।

अब बात ये आती है कि क्या हमारे दैनिक जीवन में इस सिध्दांत की उपयोगिता है? जरुर हैं, आज हम जानते है कि एक सकारात्मक विचार का महत्व कितना है। एक प्रसिध्द लेखक Henry Ford ने कहा है कि "हम, अपने विचारों का ही प्रतिरुप है"। नेपोलियन हिल ने भी माना कि "मन जो सोचता है और विश्वास करता उसे प्राप्त कर लेता है "। विज्ञान की भाषा में समझे तो विचार एक सूचना होता है जो मस्तिष्क के माध्यम से शरीर के लाखों कोशिकाओं में परिचालित होकर अवधारणा के अनुरुप उर्जा क्षेत्र निर्मित करता है और इस उर्जा संपर्क में आने वालों के अंदर वही विचार उत्पन्न हो जाता है। बात स्पष्ट है कि यदि जिन्दगी में परिवर्तन लाना है तो पहले विचारों में परिवर्तन लाना होगा, समृध्दि और संपन्नता पाना है तो वर्तमान में अपने आपको समृध्द और संपन्न स्वीकार करना होगा। हम वो उर्जा ब्रम्हांड में भेजेंगे जो चाहते है वो भी पूर्ण विश्वास और हक के साथ। ये एक होटल में वेटर को मेनू देखकर आर्डर करने जैसे है, आपके सामने वही चीज हाजिर होता है जो आपने इच्छा की थी।

हाल ही का मेरा एक अनुभव है, मेरी सुपुत्री जो मात्र 5 वर्ष की है, एक खिलौने के लिए जिद करने लगी और मैने आनलाईन आर्डर कर दिया जिसकी डिलीवरी 7 दिनों में था। लेकिन मेरी पुत्री यह बात नही समझती थी वो हर घंटे मुझसे पुछा करती थी कि कितना टाईम आयेगा ? कहाँ पर पहुंचा है? मैं भी उसे बहलाने के लिए कह देता था कि आ ही रहा है। एक दिन बीत गया लेकिन खिलौने को पाने के लिए उनकी ललक और तीव्र हो गई अब वो दरवाजे पर जाकर विश्वास के साथ टकटकी लगाये डिलीवरी वाले के इंतजार में बैठी रहती थी। ये सब देखने के बाद मेरे से रहा नहीं गया मैने पास के शापिंग माल में जाकर पता किया तो किस्मत से वही खिलौना मौजूद था, मैनै उसे खरीद लिया और पहले वाले को रद्द कर दिया। जब मैने उसे ये दिया तो उसके खुशी का ठिकाना नहीं रहा।

यही ब्रह्मांड का सिध्दांत है जो चीज हम आस्था और विश्वास के साथ मांगते है उसे वो पुरा करने के लिए ब्रह्मांड विवश हो जाता है।

सच मत मान लेना

श्री दीपक यादव
सहायक लेखा अधिकारी

क्या आपने कभी सोचा है कि जिस तराजू की तौलने की क्षमता 5 कि.ग्रा है, उसमें यदि 100 किग्रा का भार रखा जाये तो परिणाम क्या होगा ? वो "Error" या त्रुटि बताएगा।

जिसने कभी किसी विमान को उड़ते नही देखा, वो पक्षियों को ही सबसे तेज उड़ने वाली चीज बताएगा। जिसने कभी "आर्कमिडीज का सिध्दांत" न समझा हो वो "आइंसटीन के सापेक्षिता सिध्दातं" को मनगढ़ंत ही बताएगा। जिस जानवर को सब कुछ धुंधला-धुंधला दिखता हो, वो बाज के पैनी नजर पे तो शक ही करेगा।

बात साफ है कि वो तराजू जिसकी क्षमता 5 किग्रा है वो 100 किग्रा भार रखने पर "Error" ही बताएगा, ये "Error" बहुत से रुपों में आती है जैसे "मै नही मानता , ऐसा नही हो सकता, मेरे हिसाब से तो ऐसा होता है " इत्यादि-इत्यादि।

तब क्या होगा जब एक 100 किग्रा का भार 5 किग्रा क्षमता वाले तराजू के पास जाके बोले- मेरा भार कितना है और सहसे दुख की बात तब होगी जब वो 100 किग्रा वाला भार तराजू की बात सच मान लें। ये दुनिया ऐसे बहुत से तराजुओं से भरी पड़ी है जो दुनिया में दूसरों का भार बताते फिरते है।

आप सोच रहे होंगे इसमें गलत क्या है, आखिर सबको अपने विचार व्यक्त करने की आजादी है इस देश में। बिल्कुल आजादी है, मगर कब किसी की ये अभिव्यक्ति की आजादी दूसरों का अभिषाप बन जाती है इसी के बाद में मै अपने जीवन मे मैंने जो अनुभव किया है उसे आपके समक्ष रख रहा हूं। अंतिम निर्णय आप का है, किन्तु निर्णय पे पहुंचने से पहले मेरी पूरी बात खुले मन से पढ़िये। शायद ये कुछ तरुणावस्था के बच्चों का भला कर जाए शायद ये कुछ बच्चों को गैरजरुरी दुख से बचा ले।

आपने ये कहानी अवश्य सुनी या पढ़ी होगी कि एक चील ने अपना घोसला बनाया और एक बच्चे को जन्म देने का इंतजार करने लगी, मगर किसी कारण से वो मादा चील अपने बच्चों के जन्म से पहले ही मर जाती है। उस चील का बच्चा अण्डे से तो निकला मगर अपनी माँ को अपने पास नही पाया। अब चील का बच्चा हो या एक नाजुक चिड़िया का बच्चा, बच्चा तो बच्चा होता है और ममता के चलते एक चिड़िया को उस पर दया आ गई और उस चिड़िया ने चील के बच्चे को अपने बच्चों के साथ पाला और

बड़ा किया। चील का बच्चा चिड़िया के बच्चों के साथ घुल-मिल गया, जैसा-जैसा चिड़िया के बच्चे करते वैसा ही चील का बच्चा देखकर सीखते गया। हालांकि वो था एक चील का बच्चा जो अपनी ताकत के लिए जाना जाता है और जो ताकतवर पैदा भी हुआ था, मगर उसे अपने चारों ओर उसकी ताकत, उसकी वास्तविकता को बताने वाला कोई था ही नही क्यूंकि वो तो उनके बीच बड़ा हो रहा था जो खुद शक्तिहीन थे और जिन्होने जानबूझकर शायद उसे उसकी वास्तविकता नही बताई। आखिर कौन चिड़िया चील से घबराती नहीं ? खैर उस चिड़िया की नियत पे संदेह करना गलता होगा यहां। मुद्दे की बात ये है कि ताकतवर पैदा होने के बावजूद वो चील का बच्चा एक शक्तिहीन चिड़िया का जीवन जी रहा था और ये जीवन उसके लिए वास्तविकता बन गया, जबकि वास्तविकता कुछ और ही था जिसे वो कभी जान ही नही पाया। कितने दुख की बात है।

अब आप मेरी बात से थोड़ा सहमत होने लगे होंगे। ये तो एक काल्पनिक कहानी है जो बातों को आसानी से समझा देती है। अब मै एक वास्तविक घटना बताता हूं जिससे ये बात साफ हो जाएगी कि समाज के भैया, अंकल और पड़ोसी लोग कैसे जाने-अनजाने में बच्चों के खिलाफ अपराध कर जाते है।

ये सत्य घटना एक कक्षा 3-4 में पढ़ने वाले छोटे बच्चे की कहानी है जो एक मध्यम वर्गीय परिवार से आता है। बात सन् 1990 के दशक की है, हमारे शहर इलाहाबाद में एक सरकारी इंजिनियरिंग कालेज है जो अब NIT हो गया। उस कॉलेज के हॉस्टल के सामने उस जमाने में एक बड़ी मार्केट हुआ करती थी जो समय के साथ विकास के चलते वहां से हटा दी गयी। वो बच्चा उसी मार्केट में अपने पिता के साथ नाई की दुकान पे बाल कटवाने जाया करता था। हर बार अपनी बारी इंतजार करते उसकी नजर हॉस्टल में दिखते छात्रों तक चली जाती थी। उसके मन में ये बात आ गयी कि किसी दिन मैं भी इसी कॉलेज में पढ़ूंगा। वो बच्चा अपने स्कूल में अंग्रेजी शिक्षक और प्रधानाचार्य का चहेता था। अपनी कक्षा के 2-3 अव्वल बच्चों में उसे गिना जाता था। उस समय तक उसका मन आत्मविश्वास से भरा था, उस समय तक किसी ने उसके मन में संदेह का जहर नही घोला था। ऐसे ही एक दिन बाल कटवाने के बाद अपनी उत्सुकता के चलते उसने अपने पिता से पूछ ही लिया कि इस कॉलेज में प्रवेश कैसे मिलता है? उसने सोचा कि जवाब यही होगा कि खूब पढ़ाई करनी पड़ेगी। मगर वो गलत था पिता ने रूखे मन से जवाब दिया " तुम्हारा कभी नही होगा वहाँ "।

आत्मविश्वास पर पहला प्रहार

शाम को उसने अपने एक भैया से यही पूछा जो एक बेरोजगार स्नातक था। उससे जवाब मिला " उसी का प्रवेश होता है जिसके पास बहुत पैसा होता है, प्रवेश परीक्षा तो बस एक दिखावा है "।

आत्मविश्वास पे दूसरा प्रहार

आशा कि किरण दिख जाए कहीं ये सोच के वो अपनी माँ से भी यही सवाल पूछाः-"मोतीलाल में प्रवेश कैसे होगा ?" माँ ने अपने अनुभवों के आधार पर कहा-" बेटा जिसकी किस्मत बहुत तेज होती है उसी का हो पाता है इस कॉलेज में प्रवेश "। उसने सोचा, पता नही मेरी किस्मत तेज है या धीमी?

आत्मविश्वास पे तीसरा प्रहार

ऐसे ही उसने जिनसे भी पूछा, जवाब में उसे अपने आत्मविश्वास पर प्रहार ही प्रहार मिला। धीरे-धीरे ये संदेहों का जहर उसके मन में घुलता चला गया और अब वो मान के बैठ गया कि मेरा प्रवेश तो नही हो पाएगा इस कॉलेज में। फिर बीतते हुए समय के साथ उसका आत्मविश्वास कम होता चला गया। अब वो किसी भी बात को लेकर इतना दृढ़ नही रहा। वो सोचता, हो सकता है मेहनत से सब न मिलता हो, हो सकता है किस्मत खराब है मेरी, हो सकता है पैसा वालों का ही प्रवेश होता हो या हो सकता है मै काबिल नही हूँ। ऐसे ही कई "हो सकता है" रुपी संदेहो को वो अपने मन में बसाता चला गया और संदेहो ने उसके मन में पहले से बसे आत्मविश्वास की जगह ले ली।

मगर इतना सब कुछ क्यूं सोच रहा है वो आज ? क्यूं आज उसे विश्वास हो कि ये भैया, अंकल और पड़ोसी लोग गलत या झूठ बोल रहे थे। क्यूंकि उस बच्चे ने इंटरमिडियट पास करने के बाद कुछ साल स्वध्याय कर AIEEE में अच्छी रैंक लाया ओर NIT के स्तर के ही एक सरकारी इंजिनियरिंग कॉलेज में प्रवेश पा लिया और इसके लिए न उसे अच्छी किस्मत की जरुरत पड़ी न कोई पैसा देना पड़ा और न ही वो अयोग्य था। बात बस इतनी सी थी कि उसे बाकि मेहनत करनी पड़ी जो उसने की। प्रवेश हो गया। उस दिन जीवन में बड़े दिनो बाद बहुत खुश था। आप सोच रहे होंगे कि ये तो सच्ची घटना कम और फिल्मी कहानी ज्यादा लग रही है जिसमें अंत में हिरो जीत जाता है। काश ऐसा होता। उस बच्चे को इंजिनियरिंग के तीसरे-चौथे साल आते अपने सिनियर और प्रोफेसर से ये पता चला कि जिन 2-3 सालों में उसके कॉलेज में पढ़ने का मकसद जो कि एक बड़ी निजी कंपनी में नौकरी पाना होता है, खत्म ही हो गया। उसे पता चला कि कंपनियां 1 से ज्यादा सालों के गेप वालों छात्रों को नौकरी ही नहीं देती है। उसका जीवन बरवाद करने मे वो भैया, अंकल और पड़ोसी जीत गए। पूरी तरह से न सही पर काफी हद तक जीत गए।

किशोर कुमार का यह गाना इस परिस्थिति में सटीक बैठता है:-

"मझधार में नैया डोले, तो माझी पार लगाए,

माझी जब नाव डुबोए , उसे कौन बचाए।"

इस घटना से ये बात साफ हो जाती है कि जो खुद पे विश्वास न करके दूसरों जैसे भैया, अंकल या पड़ोसी से खुद के जीवन के महत्वपूर्ण मुद्दों पे उनकी राय लेते फिरते है, वो ये जान लें कि जिनसे राय लेने जा रहे है वो सही राय देने के लायक है या नहीं और अगर है तो क्या वास्तव में आपका भला चाहते है ? कहीं ऐसा तो नही कि वो एक चील के बच्चे को चिड़िया का बच्चा बनाना चाहते है। इसलिए इन सबकी बातों को "सच मत मान लेना"।

अब क्यूंकि मेरे लेख का अंत करीब है और मैनें आपको एक सच्ची घटना बताई तो आपके मन में यह प्रश्न जरुर आया होगी कि अब बड़े हो चुके उस बच्चे का आखिर हुआ क्या? क्या उसका जीवन पूर्ण

रुप से बर्बाद गया या वो कुछ कर पाया। उसने इंजिनियरिंग की फील्ड छोड़ दी अब वहाँ उसके लिए कुछ नही बचा। उन भैया, अंकल और पड़ोसी ने इतनी हानि तो पहुंचा ही दी थी। वो फिर से उठा और फिर से केवल अपनी मेहनत के दम पे आज एक राजपत्रित अधिकारी के रुप में सरकार को कहीं अपनी सेवा दे रहा है। भैया, अंकल और पड़ोसी पूरी तरह तो सफल नही हो पाए मगर यह इस कहानी का सुखद अंत बिलकुल नहीं है क्यूंकि उसने समय पर अपनी शक्तियों को नहीं पहचाना और कुछ 5किग्रा वाले तराजू उसका भार कम बता के वास्तव में उसे हल्का कर दिया।

इस लेख को लिखने में मेरे दो मकसद है, पहला ये कि वो अभिभावक जिनके बच्चे दुनिया के बारें में जानने के लिए ऐसे 5 किग्रा वाले तराजू पर नहीं बल्कि आप पर निर्भर रहते हो। दूसरा मकसद उन युवाओं के लिए जिनके पास अभी कुछ कर गुजर जाने का मौका है कि आप अपनी शक्तियों का आँकलन स्वयं करिये, दूसरों से मत कराइये क्यूंकि दूसरें 'आप' को आपका भार 100 किग्रा से कम ही बताएंगे। चील को चिड़िया ही बताएंगे और ऐसा नहीं है कि वो सारे तराजू आपका बुरा ही चाहते है। मुसीबत ये है कि वो अधिकतर 5 किग्रा के तराजू है "Error" बताते है। इसलिए उनकी बातों को.....

बरगद का भूत

श्री आलोक कुमार
डीईओ

बात उन दिनों की है जब मुझे मेरे दोस्त की शादी में उसके गाँव जाना पड़ा। गाँव जाने की कुछ अलग ही उत्सुकता हो रही थी क्योंकि बचपन में मैं गाँव में बहुत ही कम रहा हूँ। पर वहाँ की ठंडी हवाएँ, साफ वातावरण की बात ही कुछ और है। यही सब सोचते हुए कब पल बीत गया और वो दिन आ गया जब मुझे अजय के गाँव जाना था। वहाँ पँहुचते ही वहाँ की मिट्टी की सोंधी खुशबू मिलते ही मन बाग-बाग हो गया। सुबह की ताजी ठंडी हवाएँ मुझे बेहद भा रही थीं। मैनें कल्पना की कि इस वक्त मैं शहर की डीजल व पेट्रोल से परिपूर्ण हवा में साँस लेते हुए ऑफिस जा रहा होता। पर यहाँ पर ऐसा कुछ भी नहीं था। मैं वहाँ केवल एक सप्ताह के लिए ही गया था और इस वक्त एक सप्ताह को माह में तब्दील करने का ख्याल तो आया पर वह नामुमकिन था।

हाथ-मुँह धोकर मैं एक चारपाई पर बैठा। शरबत का ग्लास अभी मैंने उठाया ही था कि पास वाली गली में एक अंजाना सा शोर गूँज उठा और मैं ग्लास नीचे रखकर उठ खड़ा हुआ। घर से बाहर निकलकर मैंने आसपास के लोगों से जब इस शोर का कारण पूछा तो सुनकर मेरी भौंहें तन उठीं। बात ही कुछ ऐसी थी कि विश्वास करना बेहद कठिन था। गाँव के हर शख्स के मुँह पे यही बात थी कि मोहन हलवाई की बेटी को भूत ने पकड़ लिया था। तभी से वह पागलों की तरह चीख रही थी। कभी हँस रही थी और कभी मदमस्त होकर पागलों की तरह नाच रही थी। गली के सभी लोग पिंकी को देखने मोहन के घर चले जा रहे थे। मैं भी मामले की तह तक पँहुचने के लिए उधर चल पड़ा। यह केवल जिज्ञासा ही नहीं थी बल्कि मेरे मन में उठे कुछ सवाल भी थे जो शायद ही किसी विज्ञान की किताब में मिलते।

लोगों का पीछा करते-करते मैं उस गली के सामने आ पहुँचा जहाँ से शोर उठा था। वहाँ मैंने भीड़ का एक जमावड़ा पाया जिसका आकर्षण बिंदू पिंकी थी। जब मैं आगे पहुँचा तो एक पंद्रह साल की लड़की दिखाई दी जो कभी पागलों की तरह अपने बाल नोच रही थी तो कभी भीड़ की तरफ देखकर उन्हें गालियाँ देती। फिर थोड़ी ही देर में खुद ही गुनगुनाकर नाच उठती। भीड़ के बीचों-बीच घिरी पिंकी को देखकर ऐसा लगा मानो कोई तमाशा दिखा रही हो और ये भीड़ दर्शक की भाँति देख रहा हो। काले रंग का लहंगा पहना हुआ था उसने जो अब मिट्टी से सन चुकी थी। चेहरे व बालों पर लाल गुलाल फेरकर वो भीड़ की आँखों में देखकर जोर से चीखती। मानो उन्हें बता रही हो कि वो उनसे अब नहीं डरती। ना जाने किस बात का गुस्सा

था उसकी चिल्लाहट में कि सुनने वाला हर शख्स उससे भय खा गया। कोई भी उसके पास जाने की हिम्मत नहीं जुटा पाया। ये उस लड़की का भय ही था कि वो एक कदम आगे बढ़ाती तो भीड़ दस कदम पीछे चली जाती। यह देखकर वह बहुत खुश होती और "कायर-कायर" कहकर चिल्लाने लगती। चिल्लाते हुए वो ऐसे ही भीड़ को पीछे धकेलती रही और मेरे सामने आयी। पर मैंने बाकी लोगों की तरह अपने कदम पीछे नहीं खींचा। अपने अडिग नजरों से पिंकी के रौद्र रूप का सामना किया। इससे पहले कि मैं उसे और अधिक समझ पाता, वह मेरी नजरों से दूर हो चली। उसने भीड़ में खड़ी एक बच्ची को अपने पास बुलाने का प्रयत्न किया। पर वह बच्ची डर कर भाग गई। तभी अचानक से पिंकी दहाड़ मारकर रो पड़ी और जमीन पर बैठकर अपने हाथों से मिट्टी बटोरकर हवा में उड़ाने लगी। अजीब मंजर था ये जिसे समझ पाना मेरे लिए मुश्किल हो रहा था। आस-पास खड़ी भीड़ तो दर्शक की भाँति मूक खड़ी थी। थक हारकर जब उसके पिता मोहन ने उसे पकड़ना चाहा तो उसने झटककर मोहन को दूर फेंक दिया। यह दृश्य देखकर भीड़ आवाक रह गई। उसकी माँ भी एक कोने में माथा पकड़ कर रोती दिखी। पिंकी की स्थिति को काबू से बाहर जाता देख किसी में इतनी हिम्मत नहीं हुई कि उसे नियंत्रण में लाने की कोशिश कर सके।

बाहर घूमते बच्चों को उनकी माँ जबर्जस्ती घरों में ले जा रही थी ताकि उन्हें भी यह भूत ना पकड़ ले। किसी ने चुड़ैल कहा तो किसी ने "बरगद का भूत"। ज्यादातर लोग ने "बरगद का भूत" कह रहे थे क्योंकि वह पहले भी गाँव की लड़कियों को पकड़ चुका था। ये सब मुझे बकवास लग रहा था। मैंने सोचा कि मैं ही उसे समझा-बुझाकर शांत करने की कोशिश करूँ। पर जैसे ही मैं आगे बढ़ा मेरे मित्र ने मेरा हाथ पकड़ कर मुझे रोक लिया। उसने कहा कि कहीं जानलेवा हमला करने से हमारे लेने के देने ना पड़ जाए। उसने बताया कि गाँव के लोग ओझा को बुलाने गए हैं। सब जल्दी ही शांत हो जाएगा।

ओझा की बात चली तो पता चला कि पचास वर्ष के नंदलाल ओझा गाँव के मसहूर ओझाओं में से एक थे। ऐसे कई ऊपरी समस्याओं को सुलझाने का अनुभव रखते थे। पहले भी वे इस "बरगद के भूत" से निपट चुके और दूर भगा चुके थे। पर ये भूत हर दो साल में वापस आ ही जाता था। अभी दो ही वर्ष हुए थे जब पास के गाँव की 10 साल की मुन्नी भी इसी प्रेत से ग्रस्त थी। तब ये नंदलाल ओझा ही थे जिन्होंने एक निर्दोष मुर्गे की बलि देकर और देशी शराब चढ़ाकर इस भूत को मनाया था। खैर किसी तरह मोहन के आग्रह पर नंदलाल ओझा ने पिंकी को देखना स्वीकार किया और भगवा धारण किए फौरन उनके घर पधारे। भीड़ ने उन्हें आदरपूर्ण भाव से देखा और हाथ जोड़कर प्रणाम किया। मैं भी भीड़ में शामिल होकर उनकी कार्यविधि को ध्यान से देख रहा था। मोहन और तीन अन्य लोगों ने पिंकी को धर दबोचा और ओझा के सामने ला बिठाया जिसे देखकर वह आग-बबूला हो उठी। ओझा जहाँ आँख बंद करके धीमें स्वर में मंत्र जाप कर रहा था वहीं पिंकी भी उसके ध्यान को भंग करती हुई उसे गालियां देती दिखी। ओझा ने उसके बालों को खीचकर उससे पूछा, "कौन है तू?" पिंकी चुप रही। बस क्रोध से भरी आँखों से ओझा को देखती रही। इस पर ओझा ने उसे तीन-चार थप्पड़ कसकर जड़ दिया। यह देख कर पिंकी की माँ फूट-फूटकर रोने लगी। वह कुछ नहीं कर सकती थी। ओझा ने फिर पूछा, "बता, क्या चाहिए तुझे?" इस पर पिंकी ने जबाव

दिया, "मेरे सपने चाहिए मुझे। बोल दिला सकता है।" अब चारो-तरफ सन्नाटा छा चुका था। जबाब न पाकर पिंकी खीझ उठी और जोर-जोर से चीखने लगी। ओझा ने फिर आँखे बंद कर मंत्रजाप शुरू किया और कच्चे चावल के दाने पिंकी पर फेंकने लगा।

यह कैसा खेल हो रहा था? मैंने तो कभी ऐसा नहीं देखा था पर इतना जरूर समझ गया कि पिंकी को भूत नहीं पकड़ा था। बल्कि वह तो अपनी अकांक्षाओँ और सपनों की घुटन में पल-पल घुट रही थी जिसे समझने वाला कोई नहीं था । धीरे-धीरे पिंकी हिम्मत हारने लगी और अपनी मानसिक प्रताड़ना के अंतिम पड़ाव पर पहुँचते ही "धम्म" से जमीन पर बेहोश होकर गिर पड़ी। सम्पूर्ण भीड़ में हलचल मच गई और उसके आस-पास के लोगों ने उसे होश में लाने का प्रयास किया। पर कोई फायदा नहीं हुआ। फिर उसे वो लोग अस्पताल ले जाने लगे। मेरे बगल से गुजरते वक्त उसकी आँखे आधी खुली हुई थी। जैसे कि वह मुझसे मदद की गुहार लगा रही हो। मैंने उसे सहानुभूति भरी नजरों से देखा और ईश्वर से प्रार्थना की कि वह जल्द ही ठीक हो जाए।

उसके जाते ही अचानक मेरी नजर उस लड़की पर गई जो उदास नजरों से भीड़ को बिखरते हुए देख रही थी। ये वही लड़की थी जिसे कुछ देर पहले पिंकी भीड़ से पुकार रही थी। मैं उसके पास जाने लगा। पहले तो वह सहम उठी। फिर जब मैंने उसे देख एक विनम्र स्वभाव से पूछा कि क्या वह पिंकी को जानती है? तब उसने जबाव दिए बगैर अपने कदम पीछे खींच लिए और वापस चली गई। फिर मैं भी अजय के साथ वापस उसके घऱ चल पड़ा। पर मन में मैंने उस "बरगद के पेड़" को देखने का निर्णय कर लिया था जो आज सुबह की घटना में शामिल था।

शाम को खेत में टहलते हुए मैं आगे निकल पड़ा और लोगों से पूछते हुए उस "बरगद के पेड़" के पास चल दिया। कुछ ही देर बाद वह विशाल पेड़ मेरे सामने था। शानदार था वह पेड़। एकदम घना और हरा-भरा। लगभग 40 फीट उँचा था वह पेड़ जिसके तने देखने भर से ही सख्त लगते थे। जाने कितनी धारणाएँ उस पेड़ से जुड़ी हुई थीं जिसकी सच्चाई का प्रमाण किसी के पास नहीं था। तभी अचानक से किसी के पैरों की आहट ने मुझे डरा कर रख दिया। पीछे मुड़ कर देखा तो वही बच्ची थी जो सुबह मेरे सवालों का जबाव दिए बगैर चली गई थी। मैंने उससे कहा कि उसे वहां नहीं होना चाहिए। तब उसने बिना हिचकिचाए जबाव दिया कि वह और पिंकी अक्सर वहां जाया करतीं थीं। दोनों वहां दौड़ लगाते थे। उसने बताया कि अगले महीने उसके स्कूल में डांस प्रतियोगिता है जिसमें पिंकी ने भाग लिया था। इसलिए वह प्रैक्टिस करने के लिए उस पेड़ के पास आती थी। पर उसके घरवालों ने दो दिन पहले उसकी शादी ठीक कर दी थी। वह भी उसकी मर्जी के खिलाफ। जब से शादी की बात चली तभी से वह उखड़ी-उखड़ी रहने लगी। उसने बताया कि पिंकी पढ़ना चाहती थी। गाँव की गलियों से निकल कर बाहर की दुनिया देखना ही सपना था उसका।

अब जाकर मैं कुछ समझने लगा था कि पिंकी किस घुटन में कैद थी। मैं कुछ कहने ही वाला था कि सिर उठा कर देखा तो वह लड़की गायब है। मैं भी थोड़ा घबरा गया। तुरंत उठकर वहां से घर आकर चैन की सांस ली और सोचा कि पिंकी को इस दर्द से मुक्ति कैसे दिलाई जाए। मैं उसके घर गया औऱ उसके माता-

पिता से बात की। उन्हें समझाया कि पिंकी अभी छोटी है। अभी उसके सपनों का महत्व कुछ और है। बहुत समझाने के बाद वो लोग राजी हुए और शादी टालकर पिंकी की पढ़ाई आगे जारी रखने का मुझसे वादा किया। दो दिन में पिंकी पूरी तरह से स्वस्थ हो गई जिससे मुझे कहीं अधिक प्रसन्नता हुई और मेरा मन पूरी तरह से शांत हो गया।

दो दिन बाद अजय की शादी हुई और मैं घर के लिए निकल पड़ा। रास्ते में बस यही बात सोचता रहा कि आखिर वह छोटी बच्ची कौन थी जिसने मुझे पिंकी के बारे में सब बताया। क्योंकि उसका जिक्र जब मैंने कुछ लोगों से किया था तो उन लोगों ने मुझे बताया कि वहां तो आस-पास कोई बच्ची नहीं रहती। सिर्फ कुछ लड़के थे। जब मैंने उसका हुलिया बताया तो पता चला कि पिछले साल ऐसी ही एक बच्ची की मौत उस "बरगद के पेड़" से गिरकर हुई थी। ये सुनकर बस एक ही सवाल था मेरे मन मेः- क्या वह बच्ची ही थी "बरगद का भूत"।

रिश्तों की गहराई

श्री संजीव दूबे
डीईओ

आज मैं अपने अंदर छिपे रिश्तों से भरी भावनाओं को लिख रहा हूँ। मैंने इंसानी रिश्तों को कुछ हद तक देखा और समझा है। ये रिश्तें बड़े ही नाजुक से होते हैं। और शायद कभी काँच के टुकड़ों की तरह टूट कर बिखर जाते है, तो कभी अपने आप में ही गुम हो जाते हैं। मैंने किस हद तक इन रिश्तों को जाना और समझा है, ये मुझे भी मालूम नहीं लेकिन इन रिश्तों का अनुभव अवश्य किया है मैंने।

इंसान की जिंदगी में कुछ दूरियाँ, कुछ फासले और कुछ रिश्तें होते हैं। जो अपनी पहचान लिए हुए चुपचाप गुमशुम अनजान राहों पर किसी के साथ चले जा रहे होते हैं और शायद इसी को हम रिश्तों का नाम दे बैठते हैं।

रिश्ते तो बड़े नाजुक, कोमल और भावनाओं से परिपूर्ण होते हैं। कुछ लोगों ने मुझसे कहा कि तुम रिश्तों के बारे में लिखो। उनकी बातों को सुनकर मुझे ऐसा लगा कि क्यों मुझे लोग ऐसी चीजें लिखने के लिए कह रहे हैं, जिनका रास्ता तो होता है पर मंजिल नहीं। ये रिश्ते ऐसे होते हैं जो बनने के बाद इंसान को कहाँ तक ले जाए, पता ही नहीं चलता। अर्थात इन रिश्तों की मंजिल को खोज पाना शायद संभव नहीं।

एक कच्चे धागे के समान कुछ रिश्तें ऐसे होते हैं जो इंसान के पैदा होते ही अपने आप बन जाते हैं या फिर बना दिए जाते हैं। और कुछ रिश्ते ऐसे होते हैं, जिसे इंसान खुद-ब-खुद अपने हाथों से बना डालता है।

रिश्ता एक अटूट बंधन है, जो कब, किससे, कहां, कैसे बन जाए, पता ही नहीं चल पाता। इन रिश्तों की अपनी एक अलग छाप है, जिसे इंसान चाह कर भी नहीं मिटा सकता। रिश्तों का संबंध व्यक्ति की अंतरात्मा से होता है। रिश्ते नाजुक भावनाओं का मंडराता हुआ सागर हैं जो अमिट तो है पर कभी-कभी अत्यंत दुःखद भी बन जाते हैं।

जज्बातों के रिश्तों को तो मैं क्या कहूँ, उसे तो इंसानी दिल ही समझ सकता है। मगर आज का इंसान इन रिश्तों से दूर जा रहा है। शायद इसीलिए कि कब, कहां चोट दे बैठें, इसका अंदाजा लगाना भी संभव नहीं। आज दो इंसानों के दिलों के बीच एक रिश्ता होकर भी कोई रिश्ता नहीं रह गया है। "आखिर क्यों?" रिश्ते तो दो दिलों का मिलन है। जब इंसान की भावनाएँ, इंसान के विचार मिलते हैं तब जाकर एक रिश्ते का जन्म होता है। मैंने भी कुछ रिश्ते बनाए। उन रिश्तों की दिवारें तो मिट्टी की थीं पर उसकी नीव पत्थर की

अर्थात मेरा विश्वास तो अटूट था पर रिश्ते मिट्टी के थे। जो हवा का एक झोंका भी सहन नहीं कर सकते थे। पर इस दीवार में ही मेरा अस्तित्व छिपा था। आज इन रिश्तों ने मुझे टूटता राही बना दिया है। जिसके निकट जो भी आएगा, नाजुक रिश्तों की चोट खाएगा।

जब पहली बार मैंने किसी रिश्ते को बनाया था तो उस रिश्ते की महक से मैं सहम सा गया था। आज सोचता हूँ, क्या लोग ऐसे ही मुझसे रिश्ते तोड़ देंगे। फिर मुझे लगता है, रिश्ते तो होते ही हैं टूटने के लिए। लेकिन मन कहता है रिश्ते कभी टूटते नहीं। ये अमर हो जाते हैं, कुछ यादों को अपने अंदर समेट कर।

रिश्तों के लिए एक सलाह-कि-कोई किसी से रिश्ता ना तोड़े क्योंकि रिश्ते तो काँच के समान होते हैं, टूट जाने पर जोड़ा भी जा सकता है पर उनके बीच की दरार मिटाई नहीं जा सकती। अंत में मैं कहूंगा कि:-

वक्त की साख से, लम्हें नहीं तोड़ा करते,

हाथ छूटे तो, रिश्ते नहीं छोड़ा करते।

दहेज प्रथा

सुश्री सोनी कुमारी साव
डीईओ

हमारे समाज में बहुत सारी ऐसी कुप्रथाएं प्रचलित हैं जो हमारे भव्यभाल पर कलंक की कालिमा सिद्ध हो रही हैं। दहेज प्रथा उन्हीं कुप्रथाओं में से एक प्रमुख प्रथा है। इस अभिशाप के अनल में अविराम असंख्य अबलाओं की आहुति हो रही है। अभिशप्त भारतीय समाज इस पिशाचिनी के वश से मुक्त होने से अपने को असमर्थ पा रहा है। इस व्यालिनी के विष-दंत से दंशित समाज मरघट में मातम मना रहा है। महानाश की कुहेनिका में आशा की कई किरण विकीर्ण होती दृष्टिगोचर नहीं हो रही हैं।

भारतीय संस्कृति में विवाह एक पवित्र संस्कार है। दो प्राणियों पुरुष और स्त्री का युग-युग का जन्म-जन्म का पावन संबंध है। प्राचीन भारतीय समाज में नारी को अपने जीवन-साथी के चुनाव में स्वतंत्रता प्राप्त थी। स्वयंवर की प्रथा इसका प्रमाण है। सीता और द्रोपदी जैसी नारी ने स्वयंवर की प्रथा के माध्यम से ही अपने वर का वरण किया था। सावित्री ने स्वेच्छा से सत्यवान का वरण किया था। परंतु मुसलमानों के शासनकाल में यह प्रथा तिरोहित हो गई, समाप्त हो गई। तथा कथित पारिवारिक प्रतिष्ठा के नाम पर पर्दा प्रथा अपना ली गई और नारियों को असुर्यम्पश्या घोषित कर उन पर अनेक वर्जनाएं लगा दी गई।

वे माता-पिता द्वारा चयनित जीवन-सहचर को वरण करने के लिए बाध्य कर दी गई और तभी से वे दुर्भाग्य के दु:ख दैन्य से अभिशप्त होकर अश्रुओं के प्लान में प्लवित होने लगी। जैसे-जैसे समाज में आर्थिक विपन्नता बढ़ी, सामाजिक जीवन में जटिलता आयी और विवाह जैसे पवित्र संस्कार भी प्रभावित हो उठे। इसी परिस्थिति ने तिलक-दहेज जैसी निंदनीय प्रथा प्रचलित कर दी। अब बेटी-बेटे बेचे जाने लगे। वे बाजार की वस्तु हो गए और पशुओं की भांति उनका भी मोलभाव होने लगा। बेटी विपत्ति की जड़ मान ली गई और जामाता को दशम ग्रह माने जाने लगे – जमाता: दशमोग्रह: ।

किशोरावस्था का पर्दापण होते ही प्रत्येक पिता अपनी पुत्री के विवाह की चिंता से चूर हो जाता है। मन का मोद मृत और नयनों से निद्रा निवार्सित । रंगीन सपनों का राजप्रासाद धराशयी और आशालतिका पर तुषारापत। दुश्चिंताओं के दुश्चक्र में दग्धय तनुजाओं की झुसली तरुणाई। एक तो जीवन की अनेक समस्याओं से जूझता थका-हारा व्यस्त और दूसरे भीषण अर्थवादी युग के अर्थ संकट का निर्मम प्रहार। बहुत से घरों में दोनों शाम की रोटियों की व्यवस्था नहीं है। चुल्हे की आग ठंडी हो गई है। फिर भी पुत्रियों का परिणय संस्कार संपन्न तो कराना ही पड़ेगा। क्योंकि बेटी घर की सम्पति जो होती है। वरान्वे-

षण अति दुष्कर, कठिन और श्रम साध्य कार्य हो गया है। चिर साधना के उपरांत ही इसमें सिद्धि प्राप्त होती है। वर के पिता की गुहार, मनुहार, पुकार, प्रार्थना और अनुग्रह विनय के पश्चात ही, वैवाहिक संबंधों पर बात करने के लिए वे तैयार होते हैं। तिलक की मोटी राशि, बर्तन, कार, फ्रीज, टेलीविजन, गोदरेज, जेनरेटर, बीडीओ और मोटर साईकिल की मांग की लंबी सूची पुत्री के पिता के लिए मौत का परवाना प्रतीत होती है। खेत, मकान, दुकान और बधान बिकते हैं। माल-मवेशी बिकते हैं। मोटे ब्याज पर ऋण लिए जाते हैं। उस पर भी बरातियों के स्वागत में आकाश-पाताल एक करना। मांस-मछली और मदिरा की व्यवस्था होनी ही चाहिए। समझ में नहीं आता की इस सामाजिक विद्रुपता और दुर्व्यवस्था का अंत कब होगा?

यह खेल आसाँ नहीं, इतना समझ लीजिए।

इक आग का दरिया है और डूब कर जाना है।

लड़कियां अपने मन में सपनों के राजमहल सजाती हैं। भावी जीन-साथी के वैभव, प्रेम और सौंदर्य की कामनीय कल्पना में निमग्न होती हैं। परंतु जब उनके मोहक और काल्पनिक सुख-सपनों के शीश-महल यथार्थ की पाषाणी भूमि से टकराता है तब उनकी रंगीनियां बिखर जाती है और वे चूर-चूर हो जाती है। इसकी परिणति, निराशा, हताशा, मात्मदाह, निर्वासन, हत्या और तलाक में होती है। अपमान उपेक्षा की ज्वाला में जलन और वेदनाश्रुओं के सागर में जीवित जल समाधि यही भरतीय नारी की नियति है। कितना यथार्थ चित्रण है ----

अपमान उपेक्षा का विष पीते,
हाय, जन्म–जन्म है बीते,
निर्यात तो छलती रही तुझे ही
बार-बार सुनीते-सीते।

यह पापी पुरुष समाज सनातन युग से नारी का शोषण दोहन करता आ रहा है। आज भी मनोनुकूल, जीवन-साथी-चुनने की उसे स्वतंत्रता नहीं है और न स्व-विवेक से उसे कार्य करने का अधिकार है। वह समाज, पिता, माता और भ्राता की मुखपेक्षी है। उसके जीवन में एक पल का मधुमास है और न अधर पर हास। केवल अश्रुओं का हल से आंचल में अपहाय मिला है। किसी कवि ने कहा भी है –

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी,
आंचल में है दूध और आंखों में पानी।
पुन: करता रहा युगों से नर है केवल नारी का अनंलशीख
आंचल में उपहार मिला है केवल अश्रु-क्रंदन रोदन।

यह पुरुष की क्रीतदासी होकर क्रय-विक्रय की वस्तु बन गई है। वह अब तक प्रयोग की वस्तु ही बनी

हुई है। सचमुच वह पीड़न-क्रन्दन और शोषण का पर्याय बना दी गई है –

सुन लो नारी एक नाम है, पीड़न कसन-क्रंदन-रोदन का।
सुन लो नारी नाम युगों से, चिर अश्रु-उपेक्षा-शोषण का।

इस सामाजिक विकृति के नाटक का अब यवनिकापात (पटोक्षेप) होना ही चाहिए। पुरुष कई सुंदरियों से आंखे लड़ाकर क्योंकर पवित्र और आचरणवान बना रहता है और नारी क्योंकर कुलटा कहलाती है। स्वार्थी पुरुष वर्ग ने उसके लिए पतिव्रत्य की लक्ष्मण - रेखा बनायी –

"अपर क्षेत्र में सदा विचरते, क्या निज मुंह मुकुर में देव और नारी के लिए बनाई, पतिव्रत्य की लक्ष्मण रेखा?"

इस तिलक-दहेज के अभिशाप से अभिशप्त नारी, अनचाहत के संगत पयंक सायिनी बनने के लिए बाध्य कर दी गई है। उसे अब इसका प्रतिकार करना चाहिए क्योकि –

"पुरुष भागता रहा निरंतर, रुपसी तितलियों के पीछे
परिणीता रही बहाती अश्रु, बैठक सदन में आंखे मीचे।"

अत: अब समस्त चिंतकों, मनीषियों, लेखकों, साहित्यकारों को तिलक-दहेज की कुप्रथा को मिटाने के लिए आंदोलन चलाना चाहिए। नवयुवकों को आज आगे आकर पुरुष वर्ग पर लगे लांछन को धो देना चाहिए –

लम्पट सुरपति सा नर रहा अबाधित योग कार सहस्त्राक्ष
परंतु मांगता रहा अनाथजाबाला से शुचित का साक्ष्य।

काश इस दहेज की कुप्रथा का उन्मूलन कर पाते तो अनायास ही दैन्य और दुर्भाग्य की दानवी-लीला से मुक्ति मिल जाती, पुरुष तथा नारी के सुन्दर समन्वय और योग से समाज में सुख-शांति का स्वर्ग उतर जाता और प्रतिकूल परिस्थितियां अनुकूल बन जाती –

"कटुता निर्मल नेह उगलती
ज्योति नवल नरता की जलती
विष तइ ईडा बनती ममता
पशुता सेवा – पक्ष पर चलता।"

मेहनत का फल

श्री बीर किशोर जेना
एमटीएस

ये कहानी मेरी जिंदगी की कहानी का नाम है "मेहनत का फल"! जिंदगी में सब कुछ आसानी से नहीं मिलता है। उसके लिए बहुत कुछ करना और बहुत कुछ सहना पड़ता है। जब मैं छोटा था मुझे पढ़ाई का बहुत शौक था। ज़िंदगी में मुझे ऊंचाई तक जाना था। ऐसे में मैं क्या करूं ? जिससे कि मैं अपनी और अपने परिवार की मदद कर सकूं। यही सोच के बहुत परेशान रहता था।

कुछ दिन के बाद मेरा बड़ा भाई मुझे भुवनेश्वर ले आया। यह शहर मेरे लिए नया था। मेरी पढ़ाई अधूरी रह गई। भुवनेश्वर में काम ढूंढते-ढूंढते मुझे सिलाई का काम मिला। मैं यही काम करने लगा। तब मैं सोचता था कि खुद का दुकान खोलूंगा और मैंने एक दुकान खोला। दिन-रात मेहनत करके धीरे-धीरे दुकान का काम ऊंचाई तक पहुंच गया जिससे परिवार को बहुत मदद मिली। दिन-पर-दिन गुजरते रहे फिर मेरी शादी हो गई। समय गुजरता गया बच्चे भी बड़े हो गए। पहले की तुलना में मेरी जिम्मेदारी भी ज्यादा बढ़ गई थी।

एक दिन मैं दुकान में ही था वहां एक व्यक्ति आए उनसे कामकाज के सिलसिले में बातचीत हुई। फिर उन्होंने मुझे अपने कार्यालय में ले गए और ऐसे ही अस्थायी दैनिक मजदूरी की दर पर काम के लिए रखवा दिया। मैंने अपना काम बहुत मन लगा कर करना शुरू कर दिया। मेरे कार्यों से सभी बहुत खुश रहते थे। "उस कार्यालय का नाम है : प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), ओड़िशा, भुवनेश्वर।" यहां काम करते हुए कुछ वर्षों में मुझे स्थायी नौकरी पर रख लिया गया तब मुझे पता चला कि मेहनत का फल मीठा होता है। और यही जिंदगी का सच भी है। आज मैं बहुत खुश हूं जिससे पता चलता है कि कर्म करते रहो सफलता अपने आप मिल जाती है। मैं शासकीय नौकरी के बारे में सोच भी नहीं सकता था किंतु मुझे शासकीय नौकरी मिल गई तब मुझे विश्वास हो गया कि अपना कर्म पूरी मेहनत से करते रहने से फल अवश्य मिलता है।

जिम्मेदारी और मनमीत

श्री राजेश कुमार कटरे
कनिष्ठ अनुवादक

श्रद्धा इस सप्ताह कार्य की अधिकता के चलते कुछ ज्यादा ही थकान महसूस कर रही थी इसलिए आज शुक्रवार को ऑफिस से कुछ पहले ही घर के लिए निकल गई। अब दो दिन घर में रहकर आराम मिलेगा। श्रद्धा अपने माता-पिता के साथ यहां रहती है। अपने फ्लेट की सीढ़ियां चढ़ते हुए उसने माँ-पिताजी के हंसने की आवाज सुनी। मन प्रफुल्लित हो गया उसने कई दिनों बाद उनकी इस तरह हंसी सुनी, उन्हें खुश देखी थी। जब अंदर गई तो देखा कि वे एक सात-आठ साल के बच्चे के साथ लूडो खेल रहे थे। वह लड़का बार-बार कह रहा था "दादी आप चीटिंग कर रही हो" श्रद्धा के पापा हंसते हुए बोले- बेटा ये हमेशा चीटिंग करके ही जीतती है तुम ध्यान रखना जब भी इसके पसंद के अंक नहीं आते तो पासा गिरा देती है।

तभी माँ की नजर श्रद्धा पर गई और बोली, अरे बेटा तू आज ऑफिस से घर जल्दी आ गई। श्रद्धा : "हां माँ, जिस प्रोजेक्ट पर काम चल रहा था वह खत्म हो गया तो जल्दी घर आ गई।" यह बच्चा कौन है? बच्चा : मेरा नाम शिवम है सभी मुझे प्यार से शिव बुलाते हैं, मैं आपका नया पड़ोसी हूं। श्रद्धा हंसते हुए, "और मैं श्रद्धा हूं, तुम मुझे दीदी कह सकते हो। हम आज से दोस्त हैं।" माँ : चलो बेटा अब तुम घर जाकर होमवर्क कर लो दीदी थकी है आराम करेंगी। शिव अपनी लूडो समेट कर चला गया। श्रद्धा को समझ नहीं आया कि माँ शिव को भगाने की इतनी जल्दी क्यों कर रही थी। अब श्रद्धा समझी कि माँ नये-नये स्वादिष्ट व्यंजन तीन-चार दिनों से अपने इस नन्हें दोस्त के लिए पका रही थी। लेकिन शिव के बारे माँ ने उससे अब तक बताया क्यों नहीं ऐसा श्रद्धा सोचने लगी लेकिन खुश हुई कि शिव के कारण वे अब गुमसुम नहीं बल्कि प्रसन्नचित रहते हैं।

श्रद्धा के पिताजी लीलाधर कोक हल्का सा लकवे का असर था इसलिए वे कहीं आते-जाते नहीं थे, बस घर में ही अपने लायक काम कर पाते थे। उसकी माताजी सुभद्रा पति को अकेले नहीं छोड़ती थी इसलिए घर में बंधी-सी रहती थी। श्रद्धा सुबह का नाश्ता और दिन का खाना बनाकर रख जाती थी ताकि माँ-पिताजी को सुविधा हो। श्रद्धा , "माँ आपने बताया नहीं कि हमारे सामने वाले फ्लेट में लोग रहने आ गए हैं और शिव से तुम्हारी दोस्ती हो गई है।" सुभद्रा : "क्या बताती कुछ जानती नहीं उन लोगों के बारे में, वह स्कूल से आने के बाद थोड़ी देर के लिए आ जाता है। अभी इस सोसायटी में इसके दोस्त ही नहीं बने हैं।"

सुभद्रा उठकर अंदर जाने लगी तो श्रद्धा ने हाथ पकड़ कर बैठाते हुए कहा, क्या बात है माँ दिन भर की छोटी-छोटी बाते बताती हो शिव के बारे में कुछ भी नहीं बोली। ऐसा तो नहीं कि तुम मेरे सामने प्रसन्न होते हुए गिल्टी महसूस करती हो। भाई से भी फोन पर तभी बात करती हो जब मैं ऑफिस चली जाती हूं। जब उनके बारे में पूछती हूं तो कहती हो कई दिनों से बात नहीं हुई। सुभद्रा की आंखों में परेशानी झलक रही थी, वह इस तरह की बातों से स्वयं को असहज महसूस कर रही थी। वह पीछा छुड़ाने के उद्देश्य से बोली, क्या फालतू बकवास कर रही है? श्रद्धा , "नहीं माँ मुझे लगता है मैं सही कह रही हूं। मेरी शादी न होने का कारण तुम अपने-आप को मानती हो, तुमको लगता है मैं अब तक कुंवारी हूं इसलिए बहुत दुखी हूं और तुमको भी खुश होने का कोई अधिकार नहीं है।" सुभद्रा एक लंबी सांस छोड़ते हुए बोली, "तू सही कह रही है हमारे कारण तेरा विवाह नहीं हुआ अभी तक। तू इतनी सुंदर है, इतनी अच्छी नौकरी कर रही है, तेरे लिए रिश्तों की लाइन लगी थी। लेकिन यह सुनते ही कि लड़की के माता-पिता भी दहेज में मिलेंगे, सब पीछे हट गए। हमारे समाज ने उन्नति नहीं की है अभी कि लड़के वाले लड़की के साथ-साथ उसके माँ-पिता की जिम्मेदारी अपने सिर पर ले सकें।"

श्रद्धा बोली, जिम्मेदारी की बात कहां से उठती है माँ, मैं अपने पति पर आर्थिक रूप से निर्भर नहीं रहूंगी। जैसे लड़की अपने पति को उसकी पारिवारिक स्थिति के अनुसार सहयोग देती है वैसे ही सहयोग की उम्मीद करना क्या लड़कियों के लिए गलत है? आपने हमें भाई-बहन की परवरिश में कोई भेदभाव नहीं किया, हमें एक जैसा प्यार दिया। भाई की तरह मेरा भी कर्तव्य है कि मैं आपकी आवश्यकताओं का ध्यान रखूं। जिस दिन मेरी इस सोच के अनुकूल इंसान मिल जाएगा तब मैं शादी कर लूंगी। सुभद्रा का दिल इन आदर्शवादी बातों से हल्का नहीं होता था, उसे श्रद्धा की बढ़ती उम्र की चिंता सताती रहती थी। बेटे को कई बार कहा भारत में ही नौकरी ढूंढ ले लेकिन इतनी आसानी से मनपसंद नौकरी मिलती कहां और उसे विदेश जाना पड़ा है।

अगले दिन सुबह छ: बजे जब दूध वाला आया तब श्रद्धा दूध लेने के लिए उठी। सामने वाले फ्लेट से तीस-बत्तीस साल का बहुत ही सुंदर लड़का निकला, बाल बिखरे हुए थे आंखें खुल नहीं रही थी वह इस कदर नींद में था। पड़ोस के नाते श्रद्धा ने उसे कहा – हाय ! श्रद्धा की तरफ देखते हुए पता नहीं इतनी कम खुली आंखों से उसे कितना दिखा वह बोला, "अच्छा तुम हो जो उन बूढ़ा-बूढ़ी मेरा मतलब अंकल-आंटी की देखभाल करती हो।" उसका यह वाक्य सुनकर श्रद्धा सकते में आ गई और वह उत्तर की प्रतीक्षा करे बिना दरवाजा बंद करके अंदर चला गया। ऐसी स्थिति में श्रद्धा के दिल और दिमाग में एक जंग छिड़ जाती है और वह मूर्ति बनकर इस जंग को कुछ इस प्रकार सुनती है :

दिमाग : देखा कितना बदतमीज है, देखने में थोड़ा सही है तो पापा-मम्मी को बूढ़ा-बूढ़ी कहकर चला गया। घमंडी कहीं का।

दिल : हाय ! कितना हेंडसम है, एक गलती तो माफ की जा सकती है बेचारे की। नींद में था जबान फिसल गई होगी, बाद में तो अंकल-आंटी बोला न।

दिमाग : नहीं ऐसे लोगों से बात नहीं करनी चाहिए। न जाने क्या समझते हैं अपने-आप को।

दिल : नहीं उसको एक मौका और मिलना चाहिए। लेकिन श्रद्धा ऐसे अवसरों पर अपने दिल की ही सुनती थी।

एक हफ्ते से सफाई वाली नहीं आई थी, श्रद्धा ने सोची आज साफ-सफाई कर लेना चाहिए। एक घंटे से वह सफाई करने में लगी थी इतनी धूल-मिट्टी हो गई थी घर में कि वह स्वयं धूल-धूसरित हो गई। तभी घंटी की आवाज आई वह झुंझलाते हुए दरवाजा खोलने गई दरवाजा खुलते ही उसने अपने सामने शिव और वही हेंडसम लड़के को देखी। शिव झटपट अंदर भागा "मैं दादी को बता कर आता हूं।" वह लड़का, "यह चाबी आंटी को दे देना, एक टेबल आने वाली है, बस दरवाजा खोलना है, वे लोग खुद रख देंगे और यदि तुम्हारे पास नौ बजे के पहले का समय हो तो इस सामने वाले फ्लेट की भी सफाई कर देना।" अब श्रद्धा का दिल-दिमाग ही नहीं अंग-अंग गुस्सा से फड़कने लगा। किसी से बात करने से पहले पता तो कर लेना चाहिए सामने वाला कौन है। श्रद्धा ने उसे ऐसे घूरकर देखा जैसे अब उसकी आंखों से ज्वाला बरसेगी और वह लड़का जलकर ध्वस्त हो जाएगा। इतने में शिव दौड़ते हुए आया और बोला - "चलो न पापा जल्दी करो" और हाथ खींचते हुए उसे ले गया। पापा शब्द सुनकर श्रद्धा की देह शिथिल पड़ गई, तो यह शिव के पिता अंकुर हैं। सुबह ही नेमप्लेट पर यही नाम पढ़ी थी, यह तो शादीशुदा है और यही बच्चा उसका है। इसके बारे में कुछ सोचना भी पाप है। वह खामोश सी नहाने चली गई, आईने में जब अपना चेहरा देखी तो लगा अंकुर की कोई गलती नहीं थी।

समय अपनी गति से आगे बढ़ रहा था, श्रद्धा का शिव से शनिवार और रविवार को मिलना हो जाता था। उसी ने बताया अब वह स्कूल से सीधे पांच-छ: घंटे के लिए डे-बोर्डिंग में जाने लगा है, वहां शिक्षक उसका गृह कार्य कराते हैं और खाने का भी ध्यान रखते हैं। शाम को स्कूल बस उसको सोसायटी के गेट पर छोड़ जाती है।

एक दिन शाम को श्रद्धा जब ऑफिस से लौट रही थी शिव भी गेट के पास ही खड़ा था। श्रद्धा ने इशारे से उस बुलाया और गाड़ी का दरवाजा खोलते हुए बैठने के लिए कहा। फ्लेट की पार्किंग में पहुंचते ही वह उतरा और घर की तरफ दौड़कर जाने लगा, उसे ठोकर लग गई और वह गिर गया घुटने में चोट आ गई फिर भी उसने अपन फ्लेट के ताले को खोलने की कोशिश किया चूंकि वह छोटा है उसे चाबी लगाने में परेशानी होती है। श्रद्धा दौड़कर उसके पास गई और चाबी लेकर ताला खोली, उसने शिव के घाव को साफ करके प्राथमिक उपचार किया और प्यार से अपनी गोद में खींचकर बोली, "तुम बहुत बहादुर हो बेटा !" शिव को चोट में दर्द हो रहा था वह श्रद्धा के कंधे से लगकर फफक-फफकर बहुत देर तक रोता रहा। रोते-रोते उसके मुंह से एक-दो बार मम्मी शब्द भी निकला। श्रृद्ध का मन बहुत दुखी हुआ, कैसी माँ है कहां चली गई इतने छोटे से बच्चे को छोड़कर। तब शिव ने बताया, "नहीं दीदी, माँ कहीं गई नहीं है वह तो मर चुकी है।" यह सुनकर श्रद्धा का कलेजा धक रह गया सोची शिव की माँ इस दुनिया में नहीं है और वह इतना समझदार हो गया है।

अंकुर ऑफिस से आया तो शिव ने चोट के बारे में बताया तथा श्रद्धा के वात्सल्य प्रेम की भी बात बताया कि उसने ही उसे मरहम-पट्टी की थी। शिव के पापा का मन श्रद्धा के प्रति कृतज्ञता से भर गया। उसने कई बार श्रद्धा को सीढ़ियां चढ़ते उतरते देखा था, देखने में तो सीधी-सरल, भली लड़की लगती थी लेकिन एक-दो बार सामने पड़ी तो मुंह बिचकाकर अनदेखा कर दिया। शिव, श्रद्धा की बहुत तारीफ करता है पर पता नहीं वह मुझसे मुंह फुलाकर क्यों रहती है। शायद मैंने उसे पहचानने में देर कर दिया हूं। वह शिव का कितना ध्यान रखती है किसी दिन उससे मिलकर माफी मांग लेना चाहिए। एक दिन उसने बड़ी विनम्रता से श्रद्धा से बोला, "आप शिव का इतना ध्यान रखती हो, उसके लिए इतना सबकुछ करती हो, मैं आपका आभारी हूं। उस दिन गलतफहमी के कारण जो मैं आपको पहचान नहीं सका उसके लिए माफी चाहता हूं।" श्रद्धा उसके इतना बोलते ही पिघल गई, उसका दिल प्रफुल्लित हो गया, लेकिन उसके दिल और दिमाग की उथल-पुथल कुछ इस तरह चलती रही :

दिमाग : रहने दो अपने बच्चे की मदद करने के लिए आभारी होने का नाटक कर रहा है। ज्यादा बात करने की आवश्यकता नहीं है।

दिल : चाहे कुछ भी हो लड़का सलीकेदार व्यक्तित्व वाला है।

अंकुर सोच रहा था कैसी लड़की है मूर्ति बनी खड़ी है, कुछ सुनी भी की नहीं। उसने उसका ध्याना-कर्षित करने के लिए गले को खखारा तब श्रद्धा एकदम चौंकती हुई बोली, "हाँ.....हाँ कोई बात नहीं, मैं और शिव दोस्त हैं चलिए आज आपसे भी परिचय हो गया कहते हुए उसने हाथ बढ़ायी अंकुर ने उसका हाथ थाम लिया श्रद्धा को ऐसा महसूस हुआ जैसे एक गर्माहट पूरे शरीर में आ गई है। अंकुर को भी इस स्पर्श से सुकून का अहसास हुआ। समय जैसे थम गया हो, दोनों का मन नहीं हुआ एक-दूसरे का हाथ छोड़ने का। शिव ने अपने पापा का दूसरा हाथ हिलाते हुए कहा – चलो न पापा अंदर चलते हैं।" श्रद्धा का दिल इस मोहक पल को पकड़कर बैठ गया और दिल जैसे खामोश ही हो गया।

शनिवार की सुबह शिव घर में आया और कहा - "दीदी मैं और पापा फिल्म देखने जा रहे हैं, आप भी चलो हमारे साथ।" श्रद्धा चौंक गई, "नहीं ऐसा कैसे हो सकता है।" तभी अंकुर आ गया क्यों नहीं हो सकता हम अब परिचित हैं एक फिल्म तो साथ में देख ही सकते हैं। वैसे भी आप शिव के लिए इतना कुछ करती हो, फिल्म तो एक बहाना है धन्यवाद करने का। सुभद्रा भी पीछे पड़ गई "जा श्रद्धा हमारे कारण तू कहीं आती-जाती नहीं, बहुत समय से तूने फिल्म भी नहीं देखी।" फिर सभी फिल्म देखने जाते हैं। श्रद्धा को भी बहुत आनंद आया। अंकुर कुछ रोमांचक सपने बुनने लगा था।

कुछ दिनों बाद एक दिन शिव पार्क में गुमसुम बैठा हुआ था श्रद्धा भी टहलते हुए उसके पास गई, "पूछी उदास क्यों हो?" उसने जवाब दिया कि मेरे नाना-नानी आ रहे हैं और साथ में तपस्या मौसी भी आ रही है। वे मौसी को मेरी मम्मी बनाना चाहते हैं यह सुनकर श्रद्धा का मन फीका पड़ गया संभलते हुए उसने बोला इसमें बुरा क्या है, तुम अभी इतने छोटे हो तुम्हारी देखभाल की आवश्यकता है। शिव, "तपस्या मौसी मुझे अच्छी नहीं लगती। वह बस पापा से बात करती है, मुझे बार-बार अंदर जाने को कहती है, पापा भी

हंस-हंस कर उनसे बातें करते रहते हैं। मैं अकेला हो जाता हूं।" श्रद्धा , "तुम क्या चाहते हो कि तुम्हारे पापा दूसरी शादी न करें?" शिव, "दीदी, आप ही मेरी मम्मी बन जाओ न कितना अच्छा होगा दादा-दादी भी हमारे साथ रहेंगे हमारा कितना बड़ा परिवार हो जाएगा। घर में किसी भी वक्त कोई अकेला नहीं रहेगा।"

शिव के नाना-नानी और मौसी उनके घर आ गए तथा तपस्या से अंकुर की शादी की बात चली लेकिन अंकुर ने अब तक यही देखा है कि तपस्या केवल उसे प्यार करती है उसे शिव से कोई खास लगाव नहीं है। जबकि श्रद्धा शिव को समझती है तथा उसकी वजह से मुझसे संपर्क में है। उसके माता-पिता भी शिव का कितना ध्यान रखते हैं। यही सोचते हुए अंकुर ने तपस्या से शादी की बात से इंकार कर दिया तथा मन का दृढ़ किया कि वह श्रद्धा से शादी करने की पहल करेगा अब वह उसके सामने शादी का प्रस्ताव रखेगा। अगले दिन पार्किंग में श्रद्धा की गाड़ी जैसे ही रूकी वह झटपट उसके पास पहुंचा। श्रद्धा उसे देखकर आश्चर्यचकित हो गई किंतु उसने उससे कहा - "सगाई की बधाई हो आपको।" अंकुर बोला मेरी कोई सगाई नहीं हुई है बल्कि मैं आपसे शादी करना चाहता हूं यही कहने के लिए मैं आपका यहां इंतेजार कर रहा था। यदि आपके जीवन में कोई और न हो एवं इतने दिनों में मुझे आपने जितना देखा है उस आधार पर यदि मैं आपको पसंद हूं, तो तुमसे शादी करना चाहता हूं। श्रद्धा यह सुनकर बिना कोई प्रतिक्रिया दिये वहां से जाने लगी अंकुर ने पीछे से आवाज लगाया लेकिन वह अनसुना करते हुए घर ही चली गई।

श्रद्धा को बहुत खुशी हुई अंकुर के इस प्रस्ताव को सुनकर लेकिन डर था कि वह मेरे माता-पिता को साथ रखने की बात स्वीकार करेगा या नहीं। वह सोच रही थी कि यदि ऐसा वह मान जाता है तो उससे शादी करना बुरा नहीं है। शिव को भी नहीं छोड़ना पड़ेगा और मेरे माता-पिता की भी मैं परवरिश कर पाऊंगी। एक शाम सोसायटी पार्क में उसकी अंकुर से मुलाकात हुई और उसने अपनी यही बातें उसके सामने रखी अंकुर फूला नहीं समाया उसने सहर्ष हाँ कर दिया बल्कि श्रद्धा के माता-पिता की देखरेख को पुण्य का कार्य कहकर उसे आश्वस्त किया कि वर्षों पूर्व उस पर से जो माता-पिता का साया उठ गया था वही पुन: मिल गया। इस प्रकार अंकुर से श्रद्धा की शादी होना तय हो गया और यही बात सुनकर शिव की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। श्रद्धा के माता-पिता की भी चिंता खत्म हो गई। जहां उसे मनमीत मिल गया वहीं अंकुर के उजड़े जीवन में बहार आ गई। दोनों घर जाने के लगे चलते-चलते श्रद्धा बोली, "याद है न अपने साथ दहेज में मां-पिताजी को भी ला रही हूं?" अंकुर हंसते हुए बोला, "मुझे इस दहेज से कोई आपत्ति नहीं है वैसे मैं भी दहेज में अपने बेटे को ला रहा हूं।" श्रद्धा और अंकुर एक-दूसरे के मंजिल बनने के लिए राजी हो गए। दोनों अपने-अपने घर पहुंच गए। श्रद्धा को पता है कि उसे आज रात नींद नहीं आएगी लेकिन उसका चित्त शांत हो चुका है। आज उसके दिल और दिमाग शांत थे दोनों में कोई उद्वेग नहीं था क्योंकि श्रद्धा को आज अपने सपने पर जीत मिल चुकी थी।

अनियंत्रित मानव मस्तिष्क का परिणाम

कुमारी बबिता मणि

कनिष्ठ अनुवादक

कहा जाता है कि पृथ्वी पर सबसे बुद्धिमान अगर कोई जीव है तो वो है मनुष्य। मनुष्य से ज्यादा बुद्धिजीवी कोई नहीं क्योंकि पृथ्वी पर जितने भी प्रकार के जीव-जंतु, पशु-पक्षी, कीट-पतंगे इत्यादि पाए जाते हैं उन सभी में अगर कोई सबसे अच्छे तरीके से अपने आस-पास के वातावरण को समझ सकता है तो वो केवल मनुष्य ही है। सोचने, समझने की जो क्षमता ईश्वर ने मनुष्य को दे रखी है वैसा पृथ्वी के किसी भी जीव के पास नहीं है। अच्छे-बुरे की समझ रखना, किसी भी काम को करने से पहले उसपर विचार करना, किसी को कुछ बोलने से पहले सोचना, सुख-दुःख का एहसास करना, अपनी भावनाओं को अपनों के सामने व्यक्त करना इत्यादि कुछ ऐसी खुबियाँ हैं जो केवल और केवल मनुष्य के अंदर ही पायी जातीं हैं। पृथ्वी के शेष सभी जीवों में ऐसा एक भी गुण नहीं पाया जाता है जो मनुष्य को ईश्वर ने देकर इस धरा पर भेजा है। संक्षिप्त में कहें तो मनुष्य की बुद्धिमता का अंदाजा बस इसी बात से लगाया जा सकता है कि मृत शरीर में प्राण डालने के अतिरिक्त धरती का ऐसा कोई काम नहीं है जो मनुष्य की क्षमता से परे हो। मनुष्य जन्म दुर्लभ माना जाता है। अगर हम महापुरुषों द्वारा लिखी गई कृतियों को पढ़े तो यह समझ पाते हैं कि मानव तन पाने के लिए कितने जन्मों का पुण्य चाहिए। हमारे धर्म-ग्रंथों, शास्त्रों, काव्यों इत्यादि में इस दुर्लभ मनुष्य जीवन से संबंधित अनेक वर्णन किए हैं। गोस्वामी तुलसीदास ने लिखा है कि:-

बड़े भाग मानुष तन पावा।
सुर दुर्लभ सदग्रंथनि गावा।।

अर्थात बड़े ही भाग्य से यह मानव जन्म मिलता है। हमारे शास्त्रों में भी इस बात का उल्लेख किया गया है कि मानव तन को प्राप्त करना देवताओं तक के लिए कठिन होता है। अनेक जन्मों के सत्कर्मों और पुण्यों का फल होता है यह मानव तन। मनुष्य की शरीरिक रचना ईश्वर ने ऐसे किया है जिसकी तुलना धरती के किसी भी जीव से नहीं की जाती। उसी में से एक अंग है उसका मन और मस्तिष्क जो मनुष्य के पूरे शरीर का संचालन करता है। अगर मनुष्य का मन और मस्तिष्क सही और नियंत्रित ना हो तो अनेक जन्मों के सत्कर्मों और पुण्यों से मिलकर बने ऐसे मानव तन का कोई मोल नहीं रह जाएगा। ये मन और मस्तिष्क ही हैं जो मनुष्य द्वारा किए जाने वाले समस्त कार्यों को संचालित करने के लिए उसे दिशा-निर्देश देते हैं। अगर मनुष्य के शरीर से मस्तिष्क को हटा दिया जाए तो वो केवल एक जिंदा हाड़-मांश के लोथड़े के अतिरिक्त

और कुछ नहीं है। मस्तिष्क की वजह से ही मनुष्य को पृथ्वी का सबसे ज्ञानी जीव माना जाता है लेकिन ऐसे ज्ञानवान जीव के ज्ञान का क्या महत्व जिसका सदुपयोग ना हो सके। ईश्वर ने मानव मस्तिष्क का निर्माण इस प्रकार से किया है कि वो बड़े से बड़ा दुष्कर कार्य भी किसी ना किसी प्रकार से कर लेता है। लेकिन जब यही तेज से भरा मानव मस्तिष्क अनियंत्रित होता है तो इसके इतने भयंकर और विनाशकारी परिणाम देखने को मिलते हैं जिसके बारे में कभी कोई सोचा भी नहीं होता है। इतना ज्ञानी, समझदार और विलक्षण बुद्धि का होने के बावजूद भी पृथ्वी पर जितने भी प्रकार की समस्याएं जन्म लेती हैं उसके लिए भी कहीं न कहीं मनुष्य ही जिम्मेदार होता है। कहा जाता है कि जिसने अपने मन और मस्तिष्क को नियंत्रित कर लिया उसने इस धरा को जीत लिया। ईश्वर ने मनुष्य को पृथ्वी के समस्त जीवों में सबसे ज्यादा विलक्षण मस्तिष्क वाला जीव बनाकर उसे यहाँ पर लोकोपकार के उद्देश्य से भेजा है। लेकिन क्या ऐसा वो करता है? नहीं, ऐसा वह बिल्कुल नहीं करता। औरों का भला करना तो छोड़ो आज मनुष्य अपने विनाश की कहानी अपने ही हाथों लिख रहा है और अपनी इस गलती को वो ज्ञान की संज्ञा दे रहा है। इन सबके पीछे क्या वजह है जो मनुष्य ऐसा करता है? इसकी सिर्फ एक ही वजह है और वो है कि मनुष्य पूरी दुनिया पर विजय तो पा ले रहा है लेकिन अपने मन-मस्तिष्क पर नियंत्रण नहीं कर पा रहा है। जिसके कारण वह दिन-प्रतिदिन अनेक प्रकार के दुर्गुणों से ग्रषित होता जा रहा है। मनुष्य अपने ज्ञान के अहंकार में इतना गिर चुका है कि वह अपने फायदे के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार है। वो खुद के दुःख से जितना दुःखी नहीं होता उससे कहीं ज्यादा उसे इस बात का दुःख रहता है कि सामने वाला व्यक्ति इतना खुश कैसे है। मनुष्य के अंदर द्वेष की भावना इस कदर बैठ चुकी है कि वो हर वक्त खुद को श्रेष्ठ तथा औरों को तुच्छ साबित करने की कोशिश में अपनी सुख औऱ समृद्धि पर ध्यान देना भूलता जा रहा है। वो ये नहीं समझ रहा है कि दूसरों को नीचा दिखाने के चक्कर में वो खुद कितना नीचे गिरता जा रहा है। हर समय दूसरों की चुगली करना, एक-दूसरे की कमियाँ निकालना मनुष्य की आदतों में ऐसे शामिल हो चुकी है जिसके बारे अंदाजा लगाना मुश्किल है। कभी-कभी लगता है कि मनुष्य सिर्फ कहने के लिए बुद्धिमान है लेकिन वास्तविकता में उससे मुर्ख इस धरती पर कोई नहीं है। अपने फायदे के लिए किसी हद तक जाने का गुण सिर्फ मनुष्य के अंदर ही है। यही एक ऐसा प्राणी है जिसकी सोच समय के साथ बदलती रहती है। जबतक उसके जीवन में सबकुझ अच्छा चल रहा होता है तबतक तो वो औरों को नीचा दिखाता रहता है और जब उसके जीवन में परिस्थितियाँ विपरित हो जाती हैं तो इसके लिए भी वो किसी दूसरे को ही जिम्मेदार ठहरा देता है। मतलब चित भी मेरी और पट भी मेरी। जबतक उसका जीवन धन-धान्य से भरा रहता है तबतक वो किसी को अपने से बड़ा नहीं समझता । यहां तक कि उसे उस ईश्वर जिसने उसको इतना बुद्धिमान बनाकर इर पृथ्वी पर भेजा है उसकी भी याद उसे तब आती है जब उसके जीवन में कुछ गलत होने लगता है। वरना कौन भगवान, कैसा भगवान और कहां का भगवान। धर्म-कर्म, नियम-कानून इत्यादि सब मनुष्य अपनी मुठ्ठी में लेकर चलता है। मैं ये नहीं कहती कि पृथ्वी पर जितने भी मनुष्य हैं सबकी सोच एक जैसी ही है। हाँ, लेकिन अधिकांश तो वैसे ही हैं। इस संबंध में एक कहावत भी है कि "पाँचों उंगलियां एक समान नहीं होतीं"। लेकिन कहावत और वास्तविकता में आज जमीन-आसमान का फर्क देखने को मिलता है।

अब आप सोच रहें होंगें कि मैं जो इतना सबकुछ मनुष्य जाति के बारें लिख रही हूँ तो मैं कौन हूँ? मैं भी तो एक इंसान ही हूँ ना और मनुष्य के अंदर अगर इतनी सारी बुराईयाँ व्याप्त हैं तो जाहिर सी बात है कि मेरे अंदर भी होंगी। जी हाँ, बिल्कुल सही। मैं भी एक इंसान हूँ और मैं भी कभी-कभी इन सभी बुराईयों के चंगुल में फस जाती हूँ। मानवीय स्वभाव एक ऐसा स्वभाव है जो कभी नहीं बदल सकता है और मेरे अंदर भी कुछ ऐसे बदलाव समय के साथ आते रहते हैं। लेकिन एक होता है अनजाने में कोई गलती करना और दूसरा होता है जानबुझकर कोई गलती करना। एक वो लोग होते हैं जिनसे अंजाने में अगर कुछ गलती हो जाए तो वो तुरंत उसपर पश्चाताप करने लगते हैं और कुछ लोग ऐसे होते हैं जो चाहे कितनी भी गलती क्यों ना कर ले लेकिन उसका वो जरा सा भी अफसोस नहीं करते। वो उन की गई गलतियों में भी अपनी शान समझते हैं और अपनी शेखी बघारते हैं। मेरा ये लेख उसी प्रकार के लोगों से संबंधित है।

अपने मन-मस्तिष्क को नियंत्रित ना कर पाने के कारण पृथ्वी के सबसे बुद्धिमान जीव मनुष्य की सोच और स्वभाव में समय के साथ कैसे बदलाव आता है आईए आपको इसी पर एक कहानी बताती हूः- एक गाँव में एक परिवार था। वो परिवार एक संयुक्त परिवार था। उस परिवार में कुल चार भाई थे। चारों भाईयों में इतने प्यार था कि उनके प्यार और एकता की गाँव में मिसालें दी जाती थीं। उन चारों भाईयों मे से जो तीसरे नंबर का भाई था वो एक संस्कृत महाविद्यालय में लगभग आठ-दस साल से गणित पढ़ाता था लेकिन उसके बदले उसे किसी भी प्रकार का वेतन नहीं मिलता था फिर भी वह प्रतिदिन समय से विद्यालय जाता था एवं बच्चों को शिक्षित करता था। वह इतना अच्छा पढ़ाता था कि उसके ज्ञान के चर्चे चारो-ओर होते थे। उसके दो बेटे थे। वो और उसकी पत्नी इतने ज्यादा ईश्वर की भक्ति किया करते थे कि पूछो मत। दिन में एक बार भोजन करना, आधीरात को ही उठ जाना और पूजा-पाठ में लग जाना, सबकी इज्जत करना, सबसे अत्यंत प्यार से बात करना इत्यादि। उसके और उसके परिवार के लोगों के आचरण की लोग तारीफ करते नहीं थकते थे। उसकी अच्छाई और कड़ी मेहनत को देखकर सब लोग बोलते थे कि पता नहीं ईश्वर इसकी भक्ति एवं अच्छाईयों का मोल इसे और इसके परिवार को कब देंगे। उसको उस महाविद्यालय में पढ़ाते हुए लगभग दस साल का समय बीत चुका था और एक समय ऐसा आया जब सरकार की तरफ से कुछ पुराने विद्यालयों और महाविद्यालयों को सरकारी संस्था के रूप में मान्यता प्रदान करने का आदेश आया। उस आदेश के तहत उसके महाविद्यालय को भी सरकारी महाविद्यालय की मान्यता मिल गई और उसमें शिक्षा प्रदान करने वाले सभी शिक्षकों को स्थायी कर दिया गया जिसमें वो भी सरकारी शिक्षक हो गया। इतना ही नहीं उस महाविद्यालय में शिक्षक के रूप में जितने भी लोग काम कर रहे थे उनको एकमुश्त राशि के रूप में कुछ रूपये भी सरकार के द्वारा उस महाविद्यालय में शिक्षण कार्य कर रहे लोगों को प्रदान किया। ईश्वर ने उसकी भक्ति और कड़ी मेहनत का उसे फल दे दिया। अब क्या था, अब उसे हर महीने उसके शिक्षण कार्य के बदले एक मुश्त राशि मिलने लगी। उसकी पत्नी और बच्चे खुशी-खुशी अपना जीवन जीने लगे। लेकिन ऐसा महौल उनके परिवार में सिर्फ कुछ समय तक ही रहा। वो और उसका परिवार धीरे-धीरे बुराईयों की तरफ अग्रसर होने लगा। उनके मन में पैसों का घमंड आ गया। ईश्वर की भक्ति कैसी होती है वो लोग ये भूल ही गए। जो परिवार कभी लहसुन-प्याज तक अपने भोजन में सम्मिलित नहीं करता था उन्होंने मांस-मछली

खाना, मदिरा का सेवन करना, गाँव के लोगों को अपने पैसे का घमंड दिखाना, गाँव में आये दिन किसी ना किसी व्यक्ति से छोटी-छोटी बातों पर विवाद करना शुरू कर दिया। यूँ कहें तो ऐसी कोई भी बुराई नहीं है जिसमें वो और उसका परिवार संलिप्त ना हो। समय बीतता गया और वो अपने पैसों के घमंड में गलतियों पर गलतियाँ करता गया। इस हद तक वह गलत कामों में सलिप्त हो गया कि गाँव के जो लोग उसकी और उसके परिवार की अच्छाईयों की तारीफ करते नहीं थकते थे, उनलोगों ने अब उस परिवार की आलोचना करनी शुरू कर दी। उसके अपने भाई भी उससे अपना किनारा करने लगे। देखते ही देखते एकता की मिशाल एक परिवार बुराईयों और कुरीतियों का अड्डा बन गया। मन औऱ मस्तिष्क के नियंत्रित ना हो होने से मनुष्य की सोच और स्वभाव में समय के साथ कैसे बदलाव आता है और उसके इस बदलाव से उसके व्यक्तिगत जीवन के अतिरिक्त उसके आस-पास के परिवेश पर कैसा प्रभाव पढ़ता है इस कहानी से हमें यह बखूबी पता चलता है। अन्य शब्दों में कहें तो मानव के शरीर का सबसे महत्वपूर्ण अंग उसका मन और मस्तिष्क है जिसपर नियंत्रण करने की कला भी ईश्वर ने मनुष्य को दे रखी है जिसका उपयोग भी उसे स्वयं ही करना है। पिछले एक साल से कोरोना बिमारी के कारण पूरे विश्व में जो हालात पैदा हुए हैं वो साफ तौर पर मनुष्य जाँति को यह संदेश दे रहे हैं कि अगर अपने मन और मस्तिष्क को नियंत्रण में नहीं रखोगे तो उसका परिणाम क्या होगा। अंत में मैं अपनी चंद पक्तियों के माध्यम से यह बताना चाहती हूँ कि जब मानव का मन और मस्तिष्क अनियंत्रित होता है तो उसका परिणाम क्या होता है:-

किसने सोचा था धरा पर वक्त ऐसा आएगा,
जन-जन का जीवन एक दिन खौफ से भर जाएगा।
अस्त-व्यस्त होगा सबकुछ पूरा विश्व बेबस हो जाएगा,
प्रकृति का एक सुक्ष्म जीव ऐसा खेल दिखाएगा।
फुरसत आयेगा जीवन में लिए साथ में लाचारी,
खाली समय अपार भी होगा लेकिन होगी बेकारी।
अपनों की एक झलक को इंसान तरसता जाएगा,
किसने सोचा था धरा पर वक्त ऐसा आएगा.....,
किसने सोचा था धरा पर वक्त ऐसा आएगा।

अंतिम फैसला

श्रीमती शांतिलता सेठी
पर्यवेक्षक

एक दिन की बात है। 25वीं सालगिरह के अवसर पर मैं और मेरे कुछ दोस्त मिलकर दिप्ती के घर गए थे। वहां पर एक तलाकशुदा लड़की से मेरी मुलाकात हुई थी। लड़की देखने में बहुत सुंदर थी, लेकिन उसके चेहरे पर बाएँ तरफ मुँह से लेकर गले तक जले हुए का दाग था। मैं तुमको किस नाम से बुलाउं पुछने पर वह बोली, "मेरा नाम ज्योति है। आप चाहें तो मुझे मामा बुला सकती हैं।" मैं बोली, "ज्योति अच्छा है।" ऐसे ही बातों-बातों में मैंने उससे पूछा कि तुम्हारे चेहरे पर ये दाग कैसे हुआ? इस पर ज्योति बोली बाद में बताउंगी। चार घंटे में ज्योति मुझे अपनी बहन जैसी मानने लगी। उसके अंदर जो दर्द था मुझे महसूस होने लगा। उसके साथ क्या हुआ था यह जानने के लिए मैंने ज्योति को अपने घर आने को कहा। ऑफिस के कुछ जरूरी काम के लिए मेरे पति को गंगटोक जाना पड़ा। इस मौके को कैसे गवाउँ। एक दिन मैंने ज्योति को अपने घर बुलाया। ज्योति 2 बजे मेरे घर पहुँच गई। दोनो ने मिलकर खाना खाया। मैंने ज्योति से एक बार फिर पूछा।

ज्तोति बोली, "मेरी शादी अभिनव के साथ एक प्रेम विवाह था। मेरे माता-पिता इस शादी से खुश नहीं थे। मेरे माता-पिता की मैं एक ही संतान हूँ। उनके प्रति मेरी जिम्मेदारी बनती है कि मैं उनकी देखभाल करूँ।" अभिनव भी अपने माता-पिता की एकलौती संतान थे। इसलिए हम दोनों को शादी के बाद मेरे माता-पिता के पास आठ दिन तो अभिनव के माता-पिता के पास आठ दिन रहना पड़ता था। एक दिन मैं अभिनव को बोली, "देखिये आपके माता-पिता गाँव में रह रहे हैं। उन दोनों को भुवनेश्वर ले आते तो कितना अच्छा होता। मुझे विश्राम करने के लिए थोड़ा समय मिल जाता।" अभिनव मेरी बात मानकर अपने माता-पिता को मेरे माता-पिता के साथ रहने के लिए राजी करवाकर भुवनेश्वर ले आए। कुछ दिन अच्छे से बीत गये। अभिनव भी चिंता मुक्त हो गए। एक दिन अभिनव दफ्तर से जल्दी लौट आए। मैं थोड़ी देर में लौटी क्योंकि मेरा दफ्तर प्राईवेट है और मैं पी.ए. की उपाधि पर हूँ। इसलिए मेरे ऑफिसर के जाने के बाद मुझे लौटना पड़ता था। यह सब अभिनव जानते थे। उनको कोई शिकायत नहीं थी। लेकिन सास के आने के बाद वह कुछ ना कुछ बोल देते थे। मैं बोली, "अभिनव तुमको लाने के लिए नहीं जाते थे क्या?"

ज्योति बोली, "हाँ जाते थे। तब हमारे घर में काम करने वाली बाई छुट्टी पे गई थी। आठ दिन से एक महीना हो गया फोन नहीं उठा रही थी।" जब अभिनव जल्दी आ जाते थे। वह चाय बना कर दे देते थे। ऐसे हम दोनों की जिंदगी अच्छे से चल रही थी। एक दिन मुझे दफ्तर से लौटने में देर हो गई और उस समय कोई

ऑटोरिक्शॉ नहीं मिलने पर मेरे दफ्तर का एक सहकर्मी मुझे छोड़ने के लिए आया था। उसको देख कर मेरी सास ने अभिनव को बोला, "बहु का चरित्र अच्छा नहीं है। वह जब देर से आती है तो एक लड़का उसको छोड़ने के लिए आता है।" अभिनव को एक जरूरी काम के सिलसिले में पंद्रह दिन के लिए कोलकाता जाना पड़ा। उस पद्रंह दिन के अंदर मेरी सास और मेरी मां के बीच तू-तू, मैं-मैं शुरू हो गई। जब अभिनव लौटे मेरी सास ने उनको सच और झूठ मिलाकर ऐसा ज़हर पिलाया कि अभिनव ने मेरी मां से अच्छे से बात नहीं की। छोटी-छोटी बात को लेकर हम दोनों के बीच लड़ाई होने लगी। अभिनव अपने माता-पिता को लेकर गाँव चले गए और मुझे बोले कि वह मुझे मेरे माँ-बाप के साथ अकेले छोड़कर अपने माता-पिता के साथ भाड़े के मकान में रहेंगे। उनका प्यार मेरे प्रति कम होने लगा। आहिस्ता-आहिस्ता वह मुझसे दूर रहने लगे। मैंने नौकरी छोड़ दी फिर भी उनके मन में उनकी माँ ने संदेह का जो बीज बोया था वह पेड़ बन गया था।

मेरी माँ को किडनी और पापा को दिल की बिमारी है। उन दोनों को अकेले छोड़ना संभव नहीं था। इसलिए मैंने अभिनव को छोड़ने का फैसला लिया। जब तलाकनामा पर दस्तखत का समय आया तो मैं थोड़ा सोचने का वक्त माँगी। अभिनव उस दिन मेरे साथ घर में आकर रहे। उसी रात गुस्सा होकर उन्होंने मेरे चेहरे पर एसिड डाल दिया और बोले कि तुम कभी-भी शादी के लायक नहीं रहोगी। मेरे दफ्तर के लोग आए और मुझे अस्पाल लेकर गए तथा मेरा इलाज करवाया। मैंने भी तलाकनामा पर दस्तखत किया और भेज दिया। कुछ सालों के बाद सुनने को मिला कि उन्होंने दूसरी शादी कर ली और कोलकाता बदली होकर चले गए। मैं बोली, "तुमने उसके उपर केस दर्ज क्यों नहीं किया?" ज्योति बोली, "जो मुझे दिल से अपना जीवनसाथी नहीं मान रहा है मैं उसके साथ कैसे रह सकूंगी।" इससे तो अच्छा अलग रहना है। अपने लिए नहीं मेरे माता-पिता के लिए मुझे जिंदा रहना जरूरी है। मैं बोली, "ठीक है। फिर भी जिंदगी लंबी है तुम अकेली पड़ जाओगी। फिर एक बार सोच लो।" ज्योति बोली, "तुम ठीक कह रही हो लेकिन अब मेरा भरोसा सबसे उठ गया है।" मैं बोली, "मैं तुम्हारे लिए लड़का ढूंढूगी।" ज्योति बोली, "मेरे पिता जी नहीं चाह रहे कि मेरी दुबारा शादी हो।" यह कहते-कहते ज्योति रो पड़ी। ज्योति बोली कि एक तलाकशुदा लड़के ने

मेरे से शादी का प्रस्ताव रखा था लेकिन मेरे पिता जी ने इनकार कर दिया। कोई दामाद बनकर उनकी बेटी के उपर हाथ उठाए यह उनको मंजूर नहीं। मैं बोली, "तुम अकेले घर संभालोगी, अस्पताल जाओगी, मां-बाप की देखभाल भी करोगी यह सब कैसे हो पाएगा। अभी तुम्हारी तबियत ठीक चल रही है, कल को कुछ हो जाए तो तुम तीन लोगों को कौन देखेगा? इसलिए मेरी बात मानो और शादी कर लो।" मैंने उस लड़के का नाम पूछा तो ज्योति ने बाताया कि उसका नाम राकेश शर्मा है। राजस्थान का रहने वाला है। बहुत ही अच्छे स्वभाव का लड़का है। मेरे पिता जी के डर से मैं आगे नहीं बढ़ रही हूँ।

मैंने राकेश से बात करने की इच्छा जताई। ज्योति ने फोन करके उसके साथ मेरी बात करवा दी। मैंने ज्योति से राकेश को अपने साथ लेकर मेरे घर आने को बोली।। दोनों के अंदर प्यार का एक पवित्र बंधन मैंने महसूस किया। पिताजी ने बताकर ज्योति ने कोर्ट में शादी कर लिया। जब यह बात ज्योति के पिता जी को पता चली तो वह बहुत रोए लेकिन ज्योति को माफ कर दिए औऱ बेटी-दामाद को आशीर्वद देकर अपने घर बुला लिए। ज्योति के चेहरे पर जो जला हुआ दाग था प्लॉस्टिक सर्जरी करने से बिल्कुल ठीक हो गया। ज्योति इतनी सुंदर दिखने लगी कि कोई विश्वास नहीं करेगा। ज्योति इतना सुंदर पहले थी या अब है। एक पार्टी में ज्योति के पहले पति अभिनव की ज्योति से मुलाकात हो गई। अकेले ज्योति को देखकर कुछ बात करने का बहाना बनाकार उसने ज्योति को छत पर बुलाया और उसके साथ दुष्कर्म करने की कोशिश की। ज्योति ने अपने को बचाने के लिए अभिनव को छत से नीचे गिरा दिया और पुलिस बुलाकर उसने सारी सच्चाई बता दी।

हत्या के मामले में पुलिस ने ज्योति को हिरासत में ले लिया। राकेश उस वक्त राजस्थान गया था। जब यह बात उसको पता चली तो वह तुरंत आ पहुँचा और ज़मानत देकर ज्योति को घर ले आया। राकेश ने ज्योति को समझाकर प्यार से सब सुना और अच्छा वकील देकर ज्योति को इंसाफ दिलाया। कोर्ट में यह फैसला आया कि ज्योति ने अपनी इज्जत बचाने के लिए यह कदम उठाया था इसलिए उसको बाईज्जत बरी किया जाता है। राकेश ज्योति से बोला कि उसकी पहली गलती भी माफी के लायक नहीं थी और अब भी नहीं है। इसलिए भगवान ने उसको दण्ड स्वरूप मौत दिया है। हर गलती का हिसाब ऊपरवाला करता है। ऊपरवाला कभी रिश्वत नहीं लेता । किसको कैसी सजा मिलेगी इसका अंतिम फैसला वही लेता है।

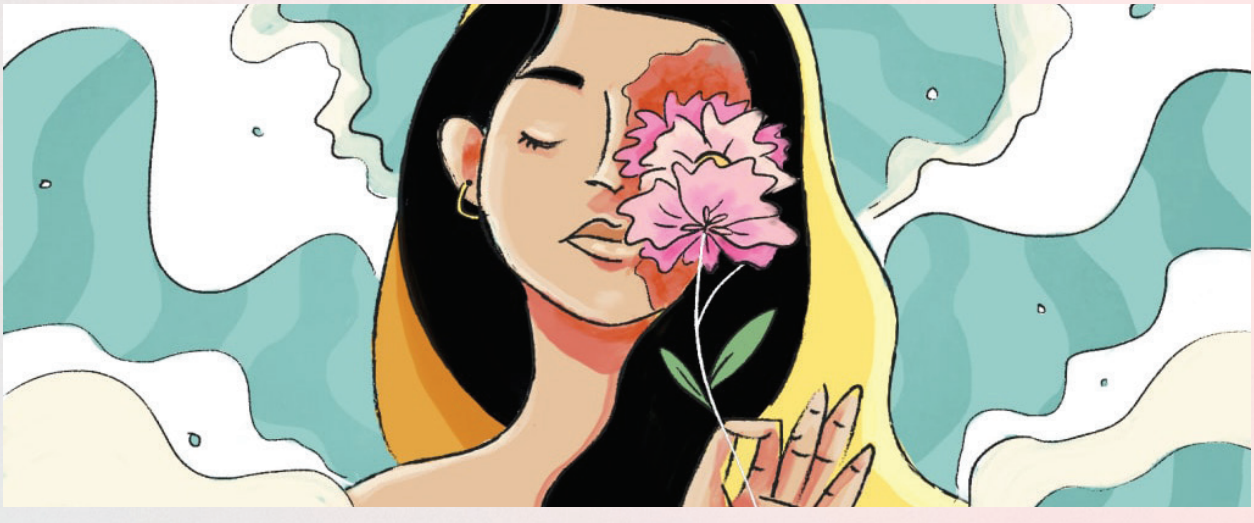

मृत्युभोज की तार्किकता

श्री रवि जायसवाल
लेखाकार

मृत्यु के पश्चात् हिंदू धर्म में सोलह संस्कार अर्थात मृतक संस्कार को जानने से पूर्व यह जान लेना समीचीन होगा कि मृत्यु क्या है ? मृत्यु होने पर मनुष्य कहां जाता है ? किस अवस्था में रहता है ? आत्मा का अस्तित्व है या नहीं ? यह सभी जिज्ञासा आदिम युग से ही मानव मन और मस्तिष्क को आंदोलित करती रही है। किन्तु अभी तक इस संदर्भ में कोई प्रामाणिक उत्तर प्राप्त नहीं हो सका है।

हम कह सकते है कि हमारा शरीर एक घर है जिसके हृदय क्षेत्र में आत्मा निवास करता है जो हमारी इंद्रियों, मन एवं बुद्धि को चैतन्य बनाता है। शरीर से इस अजर अमर आत्मा का निकल जाना ही मृत्यु है। अगर हम दर्शन की बात करे तो भारत में प्राचीन काल से ही नास्तिक एवं देहवादी लोग मृत्यु होने पर आत्मा के अस्तित्व को अस्वीकार करते रहे हैं। उन्हीं में से एक चार्वाक ऋषि भी हुए हैं उनका मत था शरीर ही आत्मा है। शरीर छोड़कर आत्मा नाम का कोई स्वतंत्र पदार्थ नहीं शरीर मरने पर आत्मा का भी अवसान हो जाता है जो वस्तु इंद्रिय ग्राह्य नहीं उसके अस्तित्व को वे स्वीकार नहीं करते थे उनकी नीति थी:-

न स्वर्गो नापवर्गो वा नैवात्मा पारलौकिकः, ।
नैव वर्णाश्रमादीनां क्रियाश्च फलदायिकाः. ॥
यावज्जीवेत्सुखं जीवेत् ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत् ।
भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः ॥

अर्थात् "जब तक जीवित हो स्वयं को भोग से वंचित मत करो। सुख एवं आराम से जीवन की आनंद सुधा का पान करते रहो। भविष्य का विचार मूर्खता छोड़कर और कुछ नहीं। तुम्हें जो कुछ भी आवश्यक लगे उसे जैसे भी हो प्राप्त कर लो। तुम्हारे पास धन नहीं खूब ऋण ले लो नहीं तो भिक्षा करके ही जुटा लो। मरने के बाद तो किसी भी कार्य के लिए कोई उत्तरदायी होगा नहीं तब फिर भावना किस बात की खाओ, पियो, मौज करो।"

इसी प्रकार पारसी, क्रिस्चियन एवं मुस्लिम धर्म स्वर्ग को ही अंतिम गंतव्य स्थल मानते हैं इन सभी धर्मों में स्वर्ग को एक चिरस्थाई एवं अक्षय स्थान माना गया है जहां दुःख नहीं है तथा अनंत काल तक सुख भोग किया जा सकता है। किंतु हिंदू धर्म में ऐसा नहीं है। हिंदू मतानुसार सभी लोक यहां तक कि स्वर्ग लोक भी कुछ काल के लिए हो सकता है करोड़ों वर्ष के लिए स्थाई हो सकता है परंतु चिरस्थाई अथवा अपरिव-

र्तनीय नहीं है तभी तो श्री कृष्ण अर्जुन से कहते हैं "ब्रह्मलोक से लेकर सभी लोक ऐसे स्थान हैं जहां से सब को वापस आना ही होगा किंतु जो मुझे प्राप्त कर लेता है उसका पुनर्जन्म नहीं होता।"

वेदान्त में इस जड़वादी चिंतन धारा का खंडन किया गया है। भगवद्गीता में कहा गया है "मनुष्य की आत्मा अविनाशी है अस्त्र के द्वारा इसे छेदन नहीं किया जा सकता, अग्नि के द्वारा जलाया नहीं जा सकता, वायु द्वारा सुखाया नहीं जा सकता तथा जल द्वारा इसे भिंगोया भी नहीं जा सकता। इस आत्मा को जो हंता एवं हन्त विचार करते हैं वे नहीं जानते कि आत्मा न हत्या करती है न हत होती है।

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ॥2.23॥

श्रीमद्भगवद्गीता में ही यह भी कहा गया है कि:-

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही॥2.22॥

अर्थात् जिस प्रकार मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्याग कर नए वस्त्र धारण करता है उसी प्रकार आत्मा पुराने तथा व्यर्थ के शरीरों को त्याग कर नवीन भौतिक शरीर धारण करता है। आत्मा के अपना वैशिष्ट्य बनाए रखने के संबंध में वेदांत कहता है कि प्रत्येक जीवात्मा पार्थिव जीवन की समस्त अभिज्ञता संस्कार एवं धारण संग ले जाती है। मन, बुद्धि एवं इंद्रिय ज्ञान भी जीवात्मा के संग रहता है। अतः जो भी विचार या कर्म वह करता है उसका समस्त फल संस्कार रुप में साथ ही जाता है।

कठोपनिषद में मृत्यु नचिकेता के पिता जब विश्वजीत यज्ञ के बाद बूढ़ी एवं बीमार गायों को ब्राह्मणों को दान में देने लगे तो नचिकेता ने अपने पिता से पूछा कि आप मुझे दान में किसे देंगे? तब नचिकेता के पिता क्रोध से भरकर बोले कि मैं तुम्हें यमराज को दान में दूंगा। चूंकि ये शब्द यज्ञ के समय कहे गए थे, अतः नचिकेता को यमराज के पास जाना ही पड़ा। यमराज अपने महल से बाहर थे, इस कारण नचिकेता ने तीन दिन एवं तीन रातों तक यमराज के महल के बाहर प्रतीक्षा की।

तीन दिन बाद जब यमराज आए तो उन्होंने इस धीरज भरी प्रतीक्षा से प्रसन्न होकर नचिकेता से तीन वरदान मांगने को कहा। नचिकेता ने पहले वरदान में कहा कि जब वह घर वापस पहुंचे तो उसके पिता उसे स्वीकार करें एवं उसके पिता का क्रोध शांत हो। दूसरे वरदान में नचिकेता ने जानना चाहा कि क्या देवी-देवता स्वर्ग में अजर एवं अमर रहते हैं और निर्भय होकर विचरण करते हैं! तब यमराज ने नचिकेता को अग्नि ज्ञान दिया, जिसे नचिकेताग्नि भी कहते हैं। तीसरे वरदान में नचिकेता ने पूछा कि 'हे यमराज, सुना है कि आत्मा अजर-अमर है। मृत्यु एवं जीवन का चक्र चलता रहता है। लेकिन आत्मा न कभी जन्म लेती है और न ही कभी मरती है।' नचिकेता ने पूछा कि इस मृत्यु एवं जन्म का रहस्य क्या है? क्या इस चक्र से बाहर आने का कोई उपाय है?

येयं प्रेते विचिकित्सा मनुष्येऽस्तीत्येके नायमस्तीति चैके।
एतद्विद्यामनुशिष्टस्त्वयाऽहं वराणामेष वरस्तृतीयः ॥

अर्थात् कोई कहते हैं मनुष्य मरने पर सदा के लिए समाप्त हो जाता है और कोई कहते हैं मनुष्य मरने के पश्चात् भी बचा रहता है इन दोनों में से कौन सत्य है ?

नचिकेता प्रश्न : किस तरह शरीर से होता है ब्रह्म का ज्ञान व दर्शन?

यमराज : मनुष्य शरीर दो आंखं, दो कान, दो नाक के छिद्र, एक मुंह, ब्रह्मरन्ध्र, नाभि, गुदा और शिश्न के रूप में 11 दरवाजों वाले नगर की तरह है, जो ब्रह्म की नगरी ही है। वे मनुष्य के हृदय में रहते हैं। इस रहस्य को समझकर जो मनुष्य ध्यान और चिंतन करता है, उसे किसी प्रकार का दुख नहीं होता है। ऐसा ध्यान और चिंतन करने वाले लोग मृत्यु के बाद जन्म-मृत्यु के बंधन से भी मुक्त हो जाता है।

नचिकेता प्रश्न : मृत्यु के बाद आत्मा को क्यों और कौन सी योनियां मिलती हैं?

यमराज : यमदेव के अनुसार अच्छे और बुरे कामों और शास्त्र, गुरु, संगति, शिक्षा और व्यापार के माध्यम से देखी-सुनी बातों के आधार पर पाप-पुण्य होते हैं। इनके आधार पर ही आत्मा मनुष्य या पशु के रूप में नया जन्म प्राप्त करती है। जो लोग बहुत ज्यादा पाप करते हैं, वे मनुष्य और पशुओं के अतिरिक्त अन्य योनियों में जन्म पाते हैं। अन्य योनियां जैसे पेड़-पौधे, पहाड़, तिनके आदि।

गरूड़ पुराण में यह उल्लेख भी मिलता है कि मृत्यु के बाद आत्मा को यमदूत केवल 24 घंटों के लिए ही ले जाते हैं और इन 24 घंटों के दौरान आत्मा को दिखाया जाता है कि उसने कितने पाप और कितने पुण्य किए हैं। इसके बाद आत्मा को फिर उसी घर में छोड़ दिया जाता है जहां उसने शरीर का त्याग किया था। इसके बाद 13 दिन के उत्तर कार्यों तक वह वहीं रहता है। 13 दिन बाद वह फिर यमलोक की यात्रा करता है। फिर प्रारब्ध के अनुसार उसे पारितोषिक या दण्ड मिलता है ।

अंत्येष्टि क्रिया के समय मंत्र बोला जाता है:- जाओ, जाओ उसी पथ पर जाओ जिस प्राचीन पथ पर हमारे पूर्व पुरुष गए हैं, सकल पापों को फेंक कर उसी ज्योतिर्मय देश में लौट जाओ तब वहां जाकर उनके साथ मिल जाओ। वेदों में ऐसे अनेक अनुच्छेद हैं जिनमें आर्य जाति के मरणोत्तर सत्ता में विश्वास की बात देखी जाती है।

दोस्तो .... जन्म, मृत्यु, बुढ़ापा और व्याधि ये चार तत्व हमारी जिन्दगी के अभिन्न अंग हैं । इन सबों में एक खास बात यह है कि यह सभी अत्यंत दुखदायी होते हैं शायद इसीलिए इस संसार को दुःखालय भी कहा जाता है। इनमें भी मृत्यु सर्वाधिक दुखदायी एवं भयावह होती है। इसीलिए तो अर्जुन जैसे गीता ज्ञानी भी अपने पुत्र अभिमन्यु के शोक में अर्ध विक्षिप्त से हो गए थे कई बार अपने सगे संबंधी एवं रिश्तेदारों की मौत से लोग मानसिक संतुलन भी खो बैठते हैं जो सर्वथा अनुचित है भारतीय वैदिक परम्परा के सोलह संस्कारों में मृत्यु यानी अंतिम संस्कार भी शामिल है। इसके अंतर्गत मृतक के अग्नि या अंतिम संस्कार के साथ कपाल क्रिया, पिंडदान आदि किया जाता है। स्थानीय मान्यता के अनुसार तीन या चार दिन बाद श्मशान से मृतक की अस्थियों का संचय किया जाता है। सातवें या आठवें दिन इन अस्थियों को गंगा, नर्मदा या अन्य पवित्र नदी में विसर्जित किया जाता है। दसवें दिन घर की सफाई या लिपाई-पुताई की जाती है।

इसे दशगात्र के नाम से जाना जाता है। इसके बाद एकादशगात्र को पीपल के वृक्ष के नीचे पूजन, पिंडदान व महापात्र को दान आदि किया जाता है। द्वादसगात्र में गंगाजली पूजन होता है। गंगा के पवित्र जल को घर में छिड़का जाता है। अगले दिन त्रयोदशी पर तेरह ब्राम्हणों, पूज्य जनों, रिश्तेदारों और समाज के लोगों को सामूहिक रूप से भोजन कराया जाता है। इसे ही मृत्युभोज कहा जाने लगा है। यह इतना खर्चीला हो गया है कि कई दुखी परिवारों की कमर टूट जाती है वे कर्ज तक में डूब जाते हैं।

ये थी वैदिक व्यवस्था

वैदिक परम्परा के अनुसार मृतक के घर पर आज भी लोग कपड़े आदि लेकर जाते हैं। इसका दायरा पहले और भी व्यापक था। परिचित व रिश्तेदार क्षमतानुसार अपने घरों से अनाज, राशन, फल, सब्जियां, दूध, दही मिष्ठान्न आदि लेकर मृतक के घर पहुंचते थे। लोगों द्वारा लाई गई तरह-तरह खाद्य सामग्री ही बनाकर लोगों को खिलाई जाती थी। इसे पहले समाज के प्रबुद्धजनों विद्वानों यानी ब्राम्हणों को दिया जाता था और वे अपने हाथों से बनाकर भोजन ग्रहण करते थे। अब तो खास रिश्तेदार भी मात्र वस्त्र आदि लेकर मृतक के घर पहुंचते हैं। बाकी लोग सद्भावना लिए केवल खाली हाथ ही पहुंच जाते हैं। वास्तव में दोस्तों मृत्यु भोज की परंपरा पहले जहां व्यक्ति को मानसिक और सामाजिक संबल देने के लिए संपन्न की जाती थी वही वर्तमान में यह केवल दिखावा बनकर रह गई है। हमें यह भी सोचना चाहिए कि जब हम प्रचात्या संस्कृति को अंधाधुंध तरीके से अपनाते हुए अपने जीवन के 1 वर्ष के समाप्ति के प्रसंग को अत्यधिक खर्चीला बनाते हुए पार्टी करते हैं तब हमें कोई आपत्ति नहीं होती ? जबकि हमारी सभ्यता और संस्कृति में दिया जलाकर खुशियों के आगमन की सूचना दी जाती है। जबकि बर्थडे पार्टी में हम अपने क्षय होते जीवन का चिंतन और मनन करने की बजाय मोमबत्ती बुझा कर अपनी खुशियों का नंगा नाच करते हैं। मेरे कहने का अर्थ यह केवल इतना ही है कि अगर मृत्यु भोज पर ऐतराज है तो हमें बर्थडे पार्टी और शादी की एनिवर्सरी पर होने वाले खर्चों पर भी लगाम लगाई जानी चाहिए साथ ही टाटा और अंबानी जैसे परिवारों में, फिल्म स्टार्स और क्रिकेटरों में अरबो रुपए खर्च कर कर देश-विदेश में होने वाली शादियों को भी तत्काल प्रभाव से बंद कर देना चाहिए।

दोस्तो भारतीय संस्कृति में जीवात्मा को मुक्त करने वाली मृत्यु का सीमित ओर सभ्य उत्सव मनाया जाता है ताकि समाज को अपने अंतिम सत्य का ज्ञान हो सके और वो सद्कर्म करते हुए अपना बचा जीवन सुधार सके। जीवन की हर घटना का उत्सव मनाते हो तो मृत्यु का क्यों नहीं? मृत्यु और जन्म सतत प्रवाह है जीवन का।

जातस्य ही ध्रुवो मृत्यु: - भगवतगीता।
जो जीवन का ध्रुव सत्य हो, उसके प्रति इतनी वितृष्णा क्यों?

मृत्यु के भय के कारण ही तो कभी तुम जीवन न जी पाये। जान न पाए कि जीवन क्या है?

मातृभाषा की अस्मिता

श्री सुंदर लाल साव
कनिष्ठ अनुवादक

मातृभाषा प्रत्येक मनुष्य का एक विशिष्ट पहचान होती है। मातृभाषा केवल संवाद एवं आपने विचारों को प्रकट करने का एक माध्यम मात्र नहीं होता, अपितु अपनी संस्कृति एवं संस्कारों की संवाहिका होती है। मातृभाषा किसी भी व्यक्ति के लिए केवल भावनात्मक विषय नहीं, बल्कि उस देश की शिक्षा, ज्ञान-विज्ञान, तकनीकी विज्ञान, सामाजिक एवं राजनैतिक विकास से जुड़ी हुई होती है।

किसी भी राष्ट्र की पहचान उसकी भाषा एवं उसकी संस्कृति से होती है। किसी भी व्यक्ति के विचारों एवं भावनाओं की अभिव्ययक्ति मूलतः उसकी मातृभाषा में ही होती है। मातृभाषा से इत्तर भाषा में आप कभी भी स्पष्ट रूप से अपनी आंतरिक भावनाओं को व्यक्त नहीं कर सकते।

आज मुझे बहुत दुःख होता है। जब आस-पास के सहकर्मियों या किसी अन्य कार्यालयों में काम करने वाले कर्मियों को देखें तो वे लोग अपनी मातृभाषा से ज्यादा आयातित भाषा को जानने या बोलने वाले लोगों को सम्मान की दृष्टि से देखते हैं। मैं कई बार, इसे चर्चा का विषय बनाया, पर कई बुद्धिजीवियों को आयातित भाषा को सम्मान देना, ज्यादा अच्छा लगता है। शायद वर्तमान समय में या पूर्व से ही हमारे देश में विद्वता की पहचान इसी पैमाने पर आँकते आए हैं। उसे ही हम विद्वान समझते हैं जो अंग्रेजी फर्राटेदार बोलते हैं। इसमें किसी एक व्यक्ति या सामाज को दोषारोपण करना उचित नहीं होगा। आज हम अंग्रेजी के शिक्षकों को अधिक महत्व देते हैं, हिंदी या अन्य भाषाओं के शिक्षकों के तुलना में। यह बात हम सभी पर लागू होता है। आपने देखा होगा कि जब दो-चार सहकर्मी आपस में किसी मुद्दे पर चर्चा करते हैं तो मातृभाषा में त्रुटि होने पर भी कोई सुधार नहीं करते हैं परंतु वहीं अंग्रेजी गलत होने पर सुधार करने के लिए तत्पर रहते हैं। यहाँ तक कि उस व्यक्ति को उपहास का सामना भी करना पड़ता है।

वर्तमान समय में प्रत्येक बड़े शहरों के अलावा छोटे शहरों में भी अंग्रेजी सिखाने के लिए शिक्षण संस्थान खोले जा रहे हैं, परंतु आपने शायद ही कहीं हिंदी या अन्य मातृभाषा को सिखाने के लिए, ऐसे संस्थानों को देखा होगा। इसकी आंतरिक सच्चाई यह भी है कि शायद शिक्षण संस्थायें तो खुल जाए, पर छात्र ही न उपस्थिति हों।

हमारा देश बहुभाषी देश है और बहुभाषीय होने के कारण, हमें एक माध्यम भाषा की जरूरत है, जिससे हम सामने वाले के भावनाओं को आसानी से समझ सकें। चूकिः हमारा देश बहुभाषी है। अगर इन

भाषाओं में से कोई एक भाषा इनके बीच एक सेतु का काम करे तो हमें बहुत गर्व होना चाहिए। हालांकि हिंदी भाषा प्रायः इसमें सफल रही है परंतु हम मुख्य रूप से प्राथमिकता अंग्रेजी भाषा को ही देतें हैं। उदाहरणतः जब कभी भी आपके पास किसी कम्पनी के 'ग्राहक सेवा केंद्र' से सत्यापन या किसी जानकारी को देने या लेने के लिए कॉल आता है, वे आपसे अभिवादन अंग्रेजी भाषा से करते हैं। इस विषय पर मैने कई बार 'ग्राहक सेवा केंद्र' के कर्मचारी से इसके लिए शिकायत एवं सुझाव देते हुए कहा कि कृपया जब भी आप किसी ग्राहक या उपभोक्ता से सम्पर्क करें तो हिंदी में वार्तालाप करें या यदि सामनेवाला व्यक्ति समझ नहीं पा रहा है या ईच्छुक है तो ही उससे अंग्रेजी भाषा में बात करें। मेरे इस सुझाव को संज्ञान में लेते हुए, इस विषय को उच्चाधिकारियों के पास रखने की पुष्टि की।

मेरे उपरोक्त बातों से आपको लगता होगा कि मैं अंग्रेजी विरोधी हूँ, तो जी बिलकुल नहीं, मैं अपनी मातृभाषा हिंदी का प्रेमी हूँ। एक और गम्भीर विषय पर कहना चाहूँगा। हमारा कार्यालय भुवनेश्वर में है और यहाँ अधिकाशतः कर्मचारी ओड़िआ भाषा को जानने वाले हैं, फिर भी जब कोई हमारे सहकर्मी अपने किसी अनुष्ठान में निमंत्रण पत्र छपवाता है तब वह प्रायः अंग्रेजी में ही छपवाने में गर्व की अनुभूति करता है, हालांकि इस विषय पर उनका तर्क है कि सभी लोग ओड़िआ भाषा नहीं जानते, पर मेरा मानना है कि ठीक है, वह नहीं जानते तो आप उसे द्विभाषी कर दीजिए।

आज हमारे देश में मातृभाषा की उपेक्षा कर, शिक्षा के माध्यमों से उसे पृथक रखकर। जिस प्रकार के भाषा संस्कार डाले जा रहे हैं। वे भविष्य के लिए घातक है। इसका दुष्परिणाम यह होगा है कि शिक्षार्थी न तो अंग्रेजी भाषा अच्छी तरह से सीख पाएंगे और न ही मातृभाषा। आज मातृ भाषाओं एवं क्षेत्रीय भाषाओं की समृद्ध सागर सूखते जा रहे हैं और हम समृद्ध भाषा संस्कार से न सिर्फ विमुख होते जा रहे हैं, अपितु उसे भ्रष्ट भी कर रहे हैं।

वर्तमान समय में जापान, चीन, इण्डोनेशिया, म्यांमार, मलेशिया, क्यूबा, श्रीलंका, ब्राजील, मेक्सिको, चिली, कोलम्बिया आदि अपनी मातृभाषा अपनाकर ही विकास के मार्ग पर प्रशस्त है। चीन एवं जापान तो ऐसे अनुकरणीय उदाहरण है, जिन्होंने मातृभाषा के माध्यम से विकास कर, वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित हुए हैं।

महामाना मदनमोहन मालवीय, महात्मा गांधी, रविन्द्रनाथ ठाकुर, डॉ भीमराव अम्बेडकर, डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन्न जैसे वैज्ञानिकों, कई प्रमुख शिक्षाविदों तथा मनोवैज्ञानिकों ने शिक्षण को ही नैसर्गिक एवं वैज्ञानिक बताया है। समय-समय पर गठित शिक्षा आयोगों जैसे राधाकृष्णन्न आयोग एवं कोठारी आयोग इत्यादि ने भी मातृभाषा में ही शिक्षण देने की अनुशंसा की है।

मिसाईल मैन डॉ अब्दुल कलाम ने स्वंय के अनुभवों को साझा करते हुए, एक बार कहा था कि "मै अच्छा वैज्ञानिक इसलिए बना, क्योंकि मैने गणित और विज्ञान की शिक्षा मातृभाषा में प्राप्त की थी"

माँ और मातृभाषा दोनों ही सम्माननीय एवं पूजनीय हैं।

पुत्र प्यारे सुन जरा

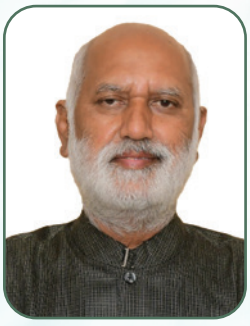

श्री राम किशोर शर्मा
कार्यालय प्रमुख, दिव्यांगो हेतु नेशनल
कैरियर सर्विस सेंटर, भुवनेश्वर

मेरे पुत्र प्यारे सुन जरा, तेरे बिन मेरा कोई नहीं,
मैं अस्त होता सूर्य हूं, होगी सुबह अब यकीं नहीं।

तूने दौलत भी दी शोहरत भी दी, इसका मुझे बड़ा फक्र है,
छोटू तू आ लग जा गले, वर्षों से तू लगा नहीं।

मुझे छोड़ कर चला तू गया, इसका भी मुझे गिला नहीं,
मैं चल रहा तेरी राह पर, फिर भी कभी तू मिला नहीं।

तू बीबी की ख्वाहिशें पूर्ण कर, तेरा फ़र्ज़ है; मेरी भी अर्ज है,
मुझे दर्द है इस बात का, मैने फ़र्ज़ यह निभाया नहीं।

बावरी तेरी मात का, अभी हौसला गिरा नहीं,
तू है हमारा; ही रहेगा, यह भ्रम अभी तक मिटा नहीं।

मेरे कॉल तू लेता नहीं, मैं जानता हूं तू व्यस्त है,
मुझे मलाल सिर्फ इतना सा है, तूने कॉल बैक किया नहीं।

एकाकीपन के बीहड़ों में, मेरी श्वास थक कर रुक गई,
आंखें खुली तुझे देखने, लेकिन तू आ पाया नहीं।

(रचनाकार राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री एवं राज्यपाल तथा विभिन्न संस्थाओं द्वारा सम्मानित, मोटिवेशनल वक्ता, सुप्रसिध्द गीतकार एवं कवि है)

हकीकत

श्री पुरूषोत्तम नंद
सहायक लेखा अधिकारी

सबका गलत दिखता है हमें,
अपना गलत, देखेगा कौन?

दुनियाँ में खामी ढूँढ रहे हम,
अपनी खामियाँ, ढूँढेगा कौन?

"दुनिया सुधरे" हम चिल्लाते हैं,
खुद को भला सुधारे कौन?

हम सुधरें तो जग सुधरेगा,
इस मुद्दे पर क्यों हम मौन।

सब्र का बाँध

श्री रवि कुमार
सहायक लेखा अधिकारी

बाँध सब्र का एक दिन टूट जाता हैं।

आसमान चिरती ऊँची चट्टानों का,

समंदर की लहरों की उफानों का गगन को चूमती,

पंछी की उड़ानों का टूट जाता है।

बाँध सब्र का एक दिन टूट जाता है।

बहती निर्झर नदियों की धाराओं का,

शांत मन में विचारों में प्रखरताओं का,

आँख दिखाती स्थिल शरीर में पीड़ाओ का टूट जाता है,

बाँध सब्र का एक दिन टूट जाता है।

ये कठिनाई हैं अभी की निरंतर प्रयासों का,

उन्मादों के भँवर में मझधारों में मल्लाहों का

गगन चूमने को, नई विचारों की नई आशाओं का टूट जाता है।

बाँध सब्र का एक दिन टूट जाता है।

कार्यालय समाचार (अवधि मार्च, 2020 से फरवरी, 2021)

पर्यवेक्षक पद पर पदोन्नति

स.क्र	कर्मचारी का नाम (सुश्री/श्रीमति/श्री)	पदोन्नत तिथि
1	बिजय कुमार नायक-I	01.01.2021
2	चंद्रमा प्रधान	01.01.2021
3	सुधांशु शेखर पंडा	01.01.2021
4	शांतिलता सेठी	01.01.2021
5	टिकेश्वर लाक्रा	01.01.2021
6	बैकुंठ चरण बेहेरा	01.01.2021
7	धरित्री प्र. पाढ़ी	01.01.2021
8	शंकर साहू	01.01.2021
9	स्वदेश कुमार नायक	01.01.2021
10	अश्विनी कुमार पट्टनायक	01.01.2021

स.क्र	कर्मचारी का नाम (सुश्री/श्रीमति/श्री)	पदोन्नत तिथि
11	देबी प्रसाद महापात्र	01.01.2021
12	रबीन्द्रनाथ राउत	01.01.2021
13	नित्यरंजन साहू	01.01.2021
14	उत्तम चरण साहू	01.01.2021
15	राधेश्याम ए. बेहेरा	01.01.2021
16	प्रेमानंद मेहेर	01.01.2021
17	गोपबंधु दास	01.01.2021
18	पद्मनाभ दास	01.01.2021
19	रामचंद्र लेंका	01.01.2021
20	विंसेट डुंगडुंग	01.01.2021

सहायक पर्यवेक्षक पद पर पदोन्नती

स.क्र	कर्मचारी का नाम (सुश्री/श्रीमति/श्री)	पदोन्नत तिथि
1	पितबास प्रधान	01.01.2021
2	बनमाली भोई	01.01.2021
3	एस.के. मोहम्मद सादिक	01.01.2021
4	प्रफुल्ल च. महांति	01.01.2021
5	अरविंद मिश्रा	01.01.2021
6	निरंजन सेठी	01.01.2021
7	बिजय कुमार नायक-II	01.01.2021
8	लेबनान एक्का	01.01.2021
9	बाईधर सोरेन	01.01.2021
10	अच्युत कुमार राउल	01.01.2021
11	सूर्यमणि राणा	01.01.2021
12	दिनेश नारायण मुखी	01.01.2021
13	फकीर चरण बेहेरा	01.01.2021
14	गणेश्वर साहू	01.01.2021
15	प्रसांत कुमार सतपथी	01.01.2021
16	गौरी शंकर मिश्रा	01.01.2021
17	सुरेश च. महापात्र	01.01.2021
18	मनोज कुमार महांति	01.01.2021
19	अशोक कुमार साहू	01.01.2021
20	नित्यानंद साहू	01.01.2021
21	प्रदीप कुमार त्रिपाठी	01.01.2021
22	अंबिका चरण पात्र	01.01.2021

स.क्र	कर्मचारी का नाम (सुश्री/श्रीमति/श्री)	पदोन्नत तिथि
23	दिलीप कुमार त्रिपाठी	01.01.2021
24	रत्नाकर स्वाईं	01.01.2021
25	रिना दास	01.01.2021
26	सिर्पण टेटे	01.01.2021
27	राजेंद्र कुमार त्रिपाठी	01.01.2021
28	मधुसूदन दास	01.01.2021
29	रंजन कुमार मल्लिक	01.01.2021
30	बिजय कुमार कुजूर	01.01.2021
31	माधब सेठी	01.01.2021
32	त्रिनाथ सेठी	01.01.2021
33	बिभूति बी. महापात्र	01.01.2021
34	हिमांशु भूषण सतपथी	01.01.2021
35	बिजय कुमार नायक-II	01.01.2021
36	शिशिर कुमार सतपथी	01.01.2021
37	ऋषिकेश बेहेरा	01.01.2021
38	बिश्वजीत बसाक	01.01.2021
39	रंजन कुमार नंद-I	01.01.2021
40	बृंदावन तरई	01.01.2021
41	सोमनाथ ओराम	01.01.2021
42	निर्मल बल	01.01.2021
43	सरोज कुमार सामल	01.01.2021
44	रमेश चंद्र डे	01.01.2021

स.क्र	कर्मचारी का नाम (सुश्री/श्रीमति/श्री)	पदोन्नत तिथि
45	पुरूषोत्तम बल	01.01.2021
46	बिजय कुमार महाराणा-II	01.01.2021
47	प्रवात कुमार साहू	01.01.2021
48	नागेंद्र कुमार महांति-I	01.01.2021
49	ज्योति टोप्नो	01.01.2021
50	नागेंद्र कुमार महांति-II	01.01.2021
51	बरदा प्रसाद नायक	01.01.2021
52	अतनु कुमार दास	01.01.2021
53	सुधांशु प्र. होता	01.01.2021
54	एस. श्रीनिवास पटनायक	01.01.2021
55	मोदासिर अहमद	01.01.2021
56	शैलेंदू एस महांति	01.01.2021
57	ताराकांत महांति	01.01.2021
58	गणेश कुमार महाराणा	01.01.2021

स.क्र	कर्मचारी का नाम (सुश्री/श्रीमति/श्री)	पदोन्नत तिथि
59	लिंगराज सिह	01.01.2021
60	एस. बाल सुब्रमणयन	01.01.2021
61	हट किशोर बेहेरा	01.01.2021
62	हरिहर हंसदा	01.01.2021
63	के.वीर राजू	01.01.2021
64	सुधीर महाराणा	01.01.2021
65	दामोदर साहू	01.01.2021
66	अखिल चंद्र मांझी	01.01.2021
67	क्षिरोद चंद्र दास	01.01.2021
68	अच्युतानंद साहू	01.01.2021
69	महेंद्र कु. सतपथी	01.01.2021
70	श्रीधर जेना	01.01.2021
71	तुषार कांती घोष	01.01.2021
72	अशोक कुमार पट्टनायक	01.01.2021

लेखाकार पद पर पदोन्नति

स.क्र	कर्मचारी का नाम (सुश्री/श्रीमति/श्री)	पदोन्नत तिथि
1	भद्र नायक	28.05.2020
2	मनोरंजन दास	02.06.2020
3	पिंकी गुर्लिया	03.06.2020
4	लुमदेव केलवदकर	02.06.2020
5	चंद्र शेखर बेहेरा	11.12.2020
6	रजत कुमार खेस	01.01.2021
7	बौरीबंधु सेठी	01.01.2021

स.क्र	कर्मचारी का नाम (सुश्री/श्रीमति/श्री)	पदोन्नत तिथि
8	देबाशीष पाईकराय	01.01.2021
9	प्रवात कुमार कानूनगो	01.01.2021
10	श्रीधर प्रसाद स्वाईं	01.01.2021
11	गौरंग चरण सेठी	01.01.2021
12	महेश्वर राउत	01.01.2021
13	अरक्षित राउल	01.01.2021
14	राज किशोर साहू	01.01.2021

लिपिक पद पर पदोन्नति

स.क्र	कर्मचारी का नाम (सुश्री/श्रीमति/श्री)	पदोन्नत तिथि
1	श्री बिजय कुमार दास	01.01.2021

नियुक्तियाँ

स.क्र	कर्मचारी का नाम (सुश्री/श्रीमति/श्री)	पद	नियुक्ति तिथि
1	जावेद फिरोज	कनिष्ठ हिंदी अनुवादक	08.10.2020
2	अमीता सामल	लेखाकार	04.02.2021
3	गुरूदास चक्रबर्ती	लिपिक	09.02.2021

समस्त पदोन्नत एवं नवनियुक्त अधिकारियों/कर्मचारियों को वातायन परिवार की तरफ से हार्दिक अभिनंदन एवं बधाई।

सेवानिवृत्ति/स्वैच्छिक सेवानिवृति

स.क्र	कर्मचारी का नाम (सुश्री/श्रीमति/श्री)/पद	सेवानिवृत्ति तिथि
1	प्रियनाथ सामल, वरिष्ठ लेखाकार	31.03.2020
2	गोबिंद च. महाराणा, सहायक लेखा अधिकारी	31.03.2020
3	गोकुल कंहार, वरिष्ठ लेखाकार	31.03.2020
4	शंकर च. भट्ट, वरिष्ठ लेखाकार	31.03.2020
5	कार्तिक कु. महापात्र, वरिष्ठ लेखाकार	31.03.2020
6	ए. रामदासु, एमटीएस	31.03.2020
7	निरंजन महांति, सहायक लेखा अधिकारी	30.04.2020
8	पुर्ण चंद्र प्रधान, सहायक लेखा अधिकारी	30.04.2020
9	मांगी सुधाकर, वरिष्ठ लेखाकार	30.04.2020
10	बिजय कुमार खटुआ, वरिष्ठ लेखाकार	30.04.2020
11	जेम्मा एस. कुल्लु, वरिष्ठ लेखाकार	30.04.2020
12	बी.बिजय सिंह, वरिष्ठ लेखाकार	30.04.2020
13	गगन च. बेहेरा, वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.05.2020
14	सिमांचल साहू, वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.05.2020
15	नटबर पंडा, सहायक लेखा अधिकारी	31.05.2020
16	बिरंची एन. साहू, सहायक लेखा अधिकारी	31.05.2020
17	सुरत कु. पट्टनायक, सहायक लेखा अधिकारी	31.05.2020
18	सुबल कुमार पात्र, सहायक लेखा अधिकारी	31.05.2020
19	चंद्र शेखर पात्र, सहायक लेखा अधिकारी	31.05.2020
20	बी. किरण, वरिष्ठ लेखाकार	31.05.2020
21	प्रमोद कुमार सामल, वरिष्ठ लेखाकार	31.05.2020
22	उदयनाथ पात्र, वरिष्ठ लेखाकार	31.05.2020
23	प्रमोद कुमार परिडा, वरिष्ठ लेखाकार	31.05.2020
24	अमिय कुमार बेहेरा, वरिष्ठ लेखाकार	31.05.2020
25	प्रसन्न कुमार बेहेरा, वरिष्ठ लेखा अधिकारी	30.06.2020
26	प्रफुल्ल च. महापात्र, सहायक लेका अधिकारी	30.06.2020
27	अशीष कुमार गिरी, सहायक लेखा अधिकारी	30.06.2020
28	विजय कुमार महराणा, सहायक लेखा अधिकारी	30.06.2020
29	प्रभात कुमार सतपथी, सहायक लेखा अधिकारी	30.06.2020
30	हेमंत कुमार मिश्रा, वरिष्ठ लेखाकार	30.06.2020
31	कैलाश च. पट्टनायक (पुरी कार्या-लय), वरिष्ठ लेखाकार	30.06.2020
32	दिपांशु महेशु (पुरी कार्यालय), वरिष्ठ लेखाकार	30.06.2020
33	भुबनंद साहू, वरिष्ठ लेखाकार	30.06.2020
34	मुर्लीधर बेहेरा, वरिष्ठ लेखाकार	30.06.2020
35	निरकर बारिक, वरिष्ठ लेखाकार	30.06.2020
36	त्रिनाथ पात्र, वरिष्ठ लेखाकार	30.06.2020
37	सुशांत कुमार पत्री, वरिष्ठ लेखाकार	30.06.2020
38	बिजय चंद्र साहु, वरिष्ठ लेखाकार	30.06.2020
39	सुमित्रा ओराम, एमटीएस	30.06.2020
40	बिबेकानंद पात्र, लेखा अधिकारी	31.07.2020
41	समरजीत दास, वरिष्ठ लेखाकार	31.07.2020
42	ललित किरो, वरिष्ठ लेखाकार	31.07.2020
43	मनोज कुमार दलाई, वरिष्ठ लेखाकार	31.08.2020
44	बिनोद कुमार दास, वरिष्ठ लेखा अधिकारी	30.09.2020
45	अजय कुमार साहू-I, सहायक लेखा अधिकारी	30.09.2020
46	जसिंता लाक्रा, वरिष्ठ लेखाकार	30.09.2020
47	लक्ष्मीधर साहु-III, वरिष्ठ लेखाकार	30.09.2020
48	चक्रधर खटुआ, वरिष्ठ लेखाकार	30.09.2020
49	बसाबीरानी चौधरी, वरिष्ठ लेखाकार	30.09.2020
50	गंधर्ब बारिक, वरिष्ठ लेखाकार	30.09.2020
51	बसंत कुमार नायक, वरिष्ठ लेखाकार	30.09.2020
52	रमाकांत सोमराज, एमटीएस	30.09.2020

स.क्र	कर्मचारी का नाम (सुश्री/ श्रीमति/श्री)/पद	सेवानिवृत्ति तिथि
53	गौरंग च. नायक, एमटीएस	30.09.2020
54	बिभूती भूषण सामंतराय, वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.10.2020
55	एटा कछुआ, वरिष्ठ लेखाकार	31.10.2020
56	प्रसन्न कुमार बेहेरा, सहायक लेखा अधिकारी	30.11.2020
57	बामदेव पैनी, सहायक लेखा अधिकारी	31.12.2020
58	बिजय टोप्नो, वरिष्ठ लेखाकार	31.12.2020
59	एम. लक्ष्मण राव, सहायक लेखा अधिकारी	31.12.2020
60	नित्यानंद विश्वास, सहायक लेखा अधिकारी	31.12.2020

स.क्र	कर्मचारी का नाम (सुश्री/ श्रीमति/श्री)/पद	सेवानिवृत्ति तिथि
61	ईश्वर चं. महापात्र, वरिष्ठ निजी सचिव	31.01.2021
62	शंकर साहू, वरिष्ठ लेखाकार	31.01.2021
63	प्रसांत कुमार सतपथी, वरिष्ठ लेखाकार	31.01.2021
64	बामदेव पंडा, लेखा अधिकारी	28.02.2021
65	सुशांत कुमार साहू, सहायक लेखा अधिकारी	28.02.2021
66	गोपबंधू नायक, सहायक लेखा अधिकारी	28.02.2021
67	क्षेत्रबासी सामल, वरिष्ठ लेखाकार	28.02.2021
68	रबिंद्रनाथ दास, वरिष्ठ लेखाकार	28.02.2021
69	रमेश चंद्र दे, वरिष्ठ लेखाकार	28.02.2021

वातायन परिवार के तरफ से सेवानिवृत्त हुए सभी अधिकारी/कर्मचारी गण को निष्ठापूर्वक कार्यकाल पूर्ण करने पर बधाई एवं सेवा उपरांत उनके सुखमय दीर्घायु जीवन की मंगलमय शुभकामना।

साथी जो बिछड़ गए

स.क्र	कर्मचारी का नाम (स्वर्गीय)	देहावसान तिथि
1	मनोज कुमार महालिक, वरिष्ठ लेखाकार	03.03.2020
2	हरयक्ष केशरी वर्मा, वरिष्ठ लेखा अधिकारी	20.06.2020
3	एस.चंद्र शेखर पट्टनायक, डीईओ	23.09.2020
4	मानस रंजन महापात्र, वरिष्ठ लेखाकार	24.09.2020
5	मनमोहन नायक, वरिष्ठ लेखाकार	05.10.2020
6	सौन चरण हंसदा, वरिष्ठ लेखाकार	25.11.2020
7	ए.भास्कर राव, वरिष्ठ लेखा अधिकारी	27.01.2021

बिछड़े हुए साथियों के लिए ईश्वर से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को परम सद्गति प्राप्त हो एवं उनके परिवारजनों को इस दुखद परिस्थिति से उबरने की शक्ति दें।

पाठकों की पाती

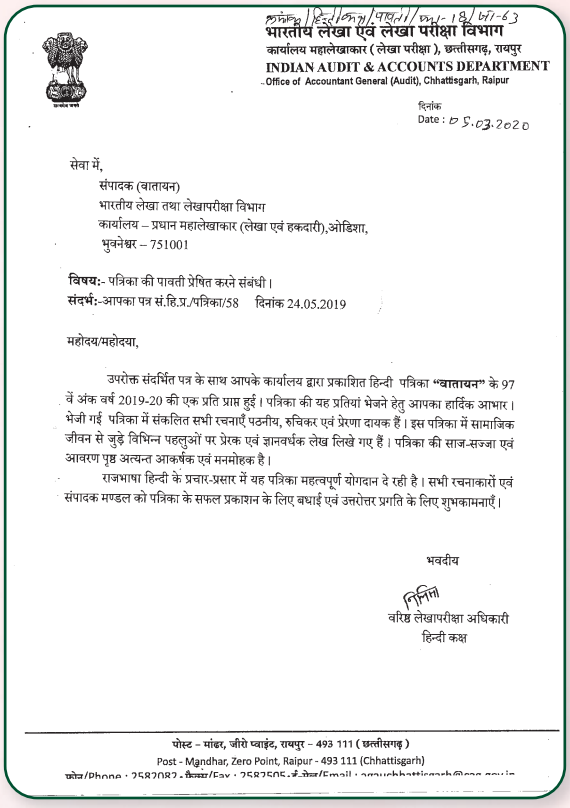

क्रमांक/हिंदी कक्ष/पावती/क्रम-18/61-63

भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग
कार्यालय महालेखाकार (लेखा परीक्षा), छत्तीसगढ़, रायपुर
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
Office of Accountant General (Audit), Chhattisgarh, Raipur

दिनांक
Date : 05.03.2020

सेवा में,
संपादक (वातायन)
भारतीय लेखा तथा लेखापरीक्षा विभाग
कार्यालय – प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),ओडिशा,
भुवनेश्वर – 751001

विषय:- पत्रिका की पावती प्रेषित करने संबंधी।
संदर्भ:-आपका पत्र सं.हि.प्र./पत्रिका/58 दिनांक 24.05.2019

महोदय/महोदया,

उपरोक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका **"वातायन"** के 97 वें अंक वर्ष 2019-20 की एक प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका की यह प्रतियां भेजने हेतु आपका हार्दिक आभार। भेजी गई पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ पठनीय, रुचिकर एवं प्रेरणा दायक हैं। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए हैं। पत्रिका की साज-सज्जा एवं आवरण पृष्ठ अत्यन्त आकर्षक एवं मनमोहक है।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ।

भवदीय

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिन्दी कक्ष

पोस्ट – मांढर, जीरो प्वाइंट, रायपुर – 493 111 (छत्तीसगढ़)
Post - Mandhar, Zero Point, Raipur - 493 111 (Chhattisgarh)
फोन/Phone : 2582082 • फैक्स/Fax : 2582505 • ई-मेल/Email : agauchhattisgarh@cag.gov.in

---

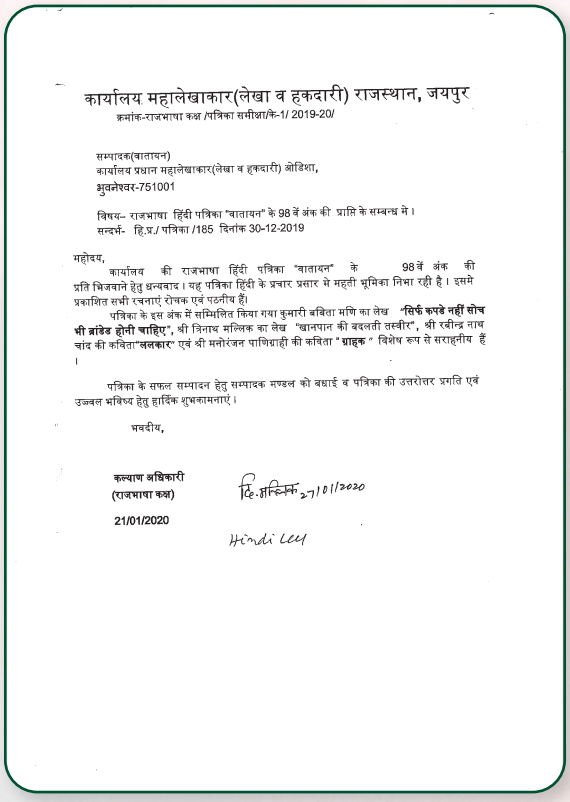

कार्यालय महालेखाकार(लेखा व हकदारी) राजस्थान, जयपुर
क्रमांक-राजभाषा कक्ष /पत्रिका समीक्षा/के-1/ 2019-20/

सम्पादक(वातायन)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार(लेखा व हकदारी) ओडिशा,
भुवनेश्वर-751001

विषय– राजभाषा हिंदी पत्रिका "वातायन" के 98 वें अंक की प्राप्ति के सम्बन्ध मे।
सन्दर्भ- हि.प्र./ पत्रिका /185 दिनांक 30-12-2019

महोदय,

कार्यालय की राजभाषा हिंदी पत्रिका "वातायन" के 98 वें अंक की प्रति भिजवाने हेतु धन्यवाद। यह पत्रिका हिंदी के प्रचार प्रसार मे महती भूमिका निभा रही है। इसमे प्रकाशित सभी रचनाएं रोचक एवं पठनीय हैं।

पत्रिका के इस अंक में सम्मिलित किया गया कुमारी बबिता मणि का लेख **"सिर्फ कपडे नहीं सोच भी ब्रांडेड होनी चाहिए"**, श्री त्रिनाथ मल्लिक का लेख "खानपान की बदलती तस्वीर", श्री रबीन्द्र नाथ चांद की कविता"**ललकार**" एवं श्री मनोरंजन पाणिग्राही की कविता "**ग्राहक**" विशेष रूप से सराहनीय हैं।

पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु सम्पादक मण्डल को बधाई व पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

कल्याण अधिकारी
(राजभाषा कक्ष)
21/01/2020

कि. मल्लिक 27/01/2020

Hindi cell

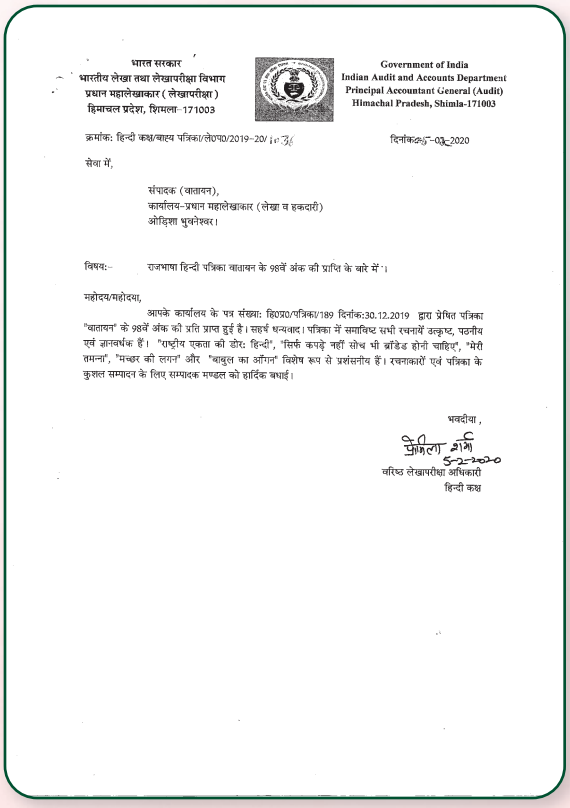

भारत सरकार
भारतीय लेखा तथा लेखापरीक्षा विभाग
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हिमाचल प्रदेश, शिमला–171003

Government of India
Indian Audit and Accounts Department
Principal Accountant General (Audit)
Himachal Pradesh, Shimla-171003

क्रमांकः हिन्दी कक्ष/बाह्य पत्रिका/ले0प0/2019–20/1036 दिनांक05–03–2020

सेवा में,

संपादक (वातायन),
कार्यालय–प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
ओड़िशा भुवनेश्वर।

विषयः– राजभाषा हिन्दी पत्रिका वातायन के 98वें अंक की प्राप्ति के बारे में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय के पत्र संख्याः हि0प्र0/पत्रिका/189 दिनांकः30.12.2019 द्वारा प्रेषित पत्रिका "वातायन" के 98वें अंक की प्रति प्राप्त हुई है। सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनायें उत्कृष्ट, पठनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। "राष्ट्रीय एकता की डोरः हिन्दी", "सिर्फ कपड़े नहीं सोच भी ब्रॉडेड होनी चाहिए", "मेरी तमन्ना", "मच्छर की लगन" और "बाबुल का आँगन" विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं। रचनाकारों एवं पत्रिका के कुशल सम्पादन के लिए सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई।

भवदीया,

प्रोमिला शर्मा
5-2-2020
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिन्दी कक्ष

पाठकों की पाती

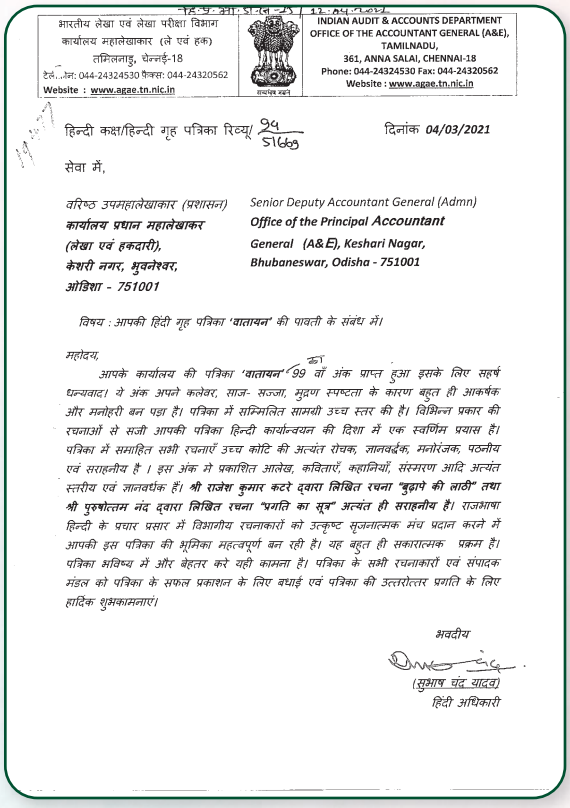

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चेन्नै का कार्यालय
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT (CENTRAL) CHENNAI

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सं प्रनिलेप(के) /हिंदी अनुभाग/14-02/2020-21/131 — दिनांक : 05.03.2021

सेवा में ,
वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा/हकदारी), ओडिशा,
भुवनेश्वर-751001

विषय : हिंदी ई-पत्रिका " वातायन " के 99 वें अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी ई-पत्रिका " वातायन " का 99 वा अंक इस कार्यालय में मेल के माध्यम से प्राप्त हुआ। धन्यवाद।

पत्रिका की संरचना आकर्षक एवं सटीक है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं पठनीय,ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। विशेषकर श्री दिनमणि मल्लिक कृत "पगली माँ" ,डॉ. नंद कुलाल दास कृत "एक ब्लैक फ्राइडे था" एवं श्री राजेश कुमार कटरे कृत 'बुढ़ापे की लाठी' अत्यंत हृदयस्पर्शी है। पत्रिका में समाहित सभी कवितायें सुंदर एवं रोचक है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हमारी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी / प्रशासन

लेखापरीक्षा भवन, 361, अण्णा सालै, तेनामपेट, चेन्नै - 600 018. "LEKHA PARIKSHA BHAVAN", 361, ANNA SALAI, TEYNAMPET, CHENNAI - 600 018.
Phone : 91-044 - 2431 6406, Fax: 91- 044 - 24338924, E.mail : dagacchennai@cag.gov.in

---

भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग कार्यालय महालेखाकार (ले एवं हक) तमिलनाडु, चेन्नई-18 टेलीफोन: 044-24324530 फ़ैक्स: 044-24320562 Website : www.agae.tn.nic.in	सत्यमेव जयते	INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E), TAMILNADU, 361, ANNA SALAI, CHENNAI-18 Phone: 044-24324530 Fax: 044-24320562 Website : www.agae.tn.nic.in

हिन्दी कक्ष/हिन्दी गृह पत्रिका रिव्यू/ — दिनांक *04/03/2021*

सेवा में,

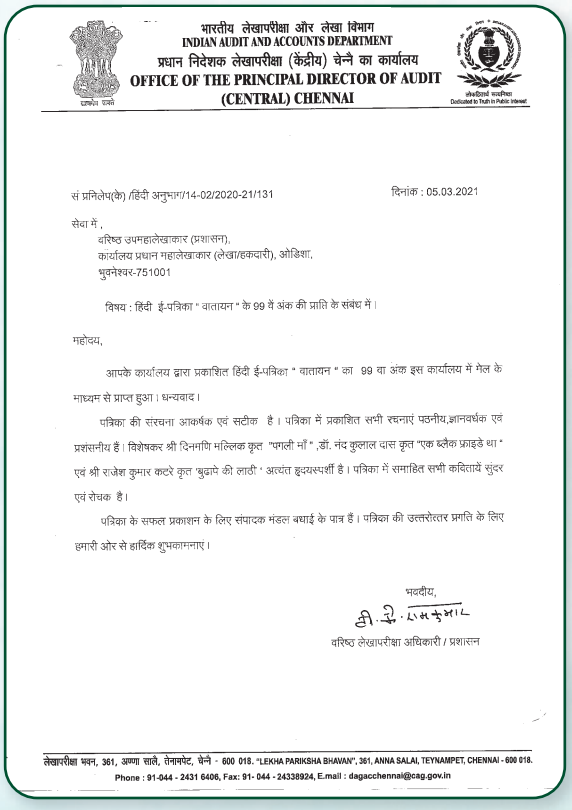

वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखा एवं हकदारी),
केशरी नगर, भुवनेश्वर,
ओडिशा - 751001

Senior Deputy Accountant General (Admn)
Office of the Principal Accountant
General (A&E), Keshari Nagar,
Bhubaneswar, Odisha - 751001

*विषय : आपकी हिंदी गृह पत्रिका '**वातायन**' की पावती के संबंध में।*

महोदय,

*आपके कार्यालय की पत्रिका '**वातायन**' 99 वाँ अंक प्राप्त हुआ इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। ये अंक अपने कलेवर, साज- सज्जा, मुद्रण स्पष्टता के कारण बहुत ही आकर्षक और मनोहरी बन पड़ा है। पत्रिका में सम्मिलित सामग्री उच्च स्तर की है। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उच्च कोटि की अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्द्धक, मनोरंजक, पठनीय एवं सराहनीय है । इस अंक मे प्रकाशित आलेख, कविताएँ, कहानियाँ, संस्मरण आदि अत्यंत स्तरीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। **श्री राजेश कुमार कटरे द्वारा लिखित रचना "बुढ़ापे की लाठी" तथा श्री पुरुषोत्तम नंद द्वारा लिखित रचना "प्रगति का सूत्र" अत्यंत ही सराहनीय है।** राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार में विभागीय रचनाकारों को उत्कृष्ट सृजनात्मक मंच प्रदान करने में आपकी इस पत्रिका की भूमिका महत्वपूर्ण बन रही है। यह बहुत ही सकारात्मक प्रक्रम है। पत्रिका भविष्य में और बेहतर करे यही कामना है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।*

भवदीय

(सुभाष चंद यादव)
हिंदी अधिकारी

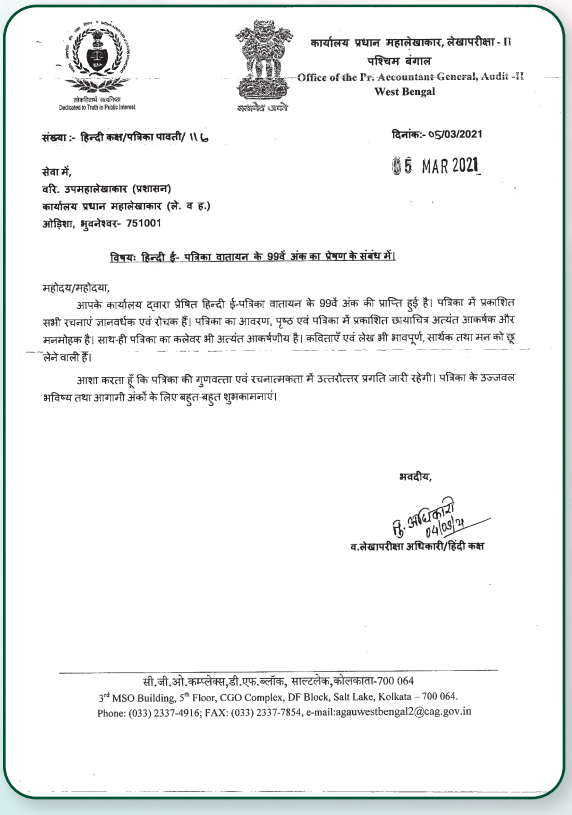

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय प्रधान महालेखाकार, लेखापरीक्षा - II
पश्चिम बंगाल
Office of the Pr. Accountant General, Audit -II
West Bengal

संख्या :- हिन्दी कक्ष/पत्रिका पावती/ — **दिनांक:- 05/03/2021**

05 MAR 2021

सेवा में,
वरि. उपमहालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व ह.)
ओड़िशा, भुवनेश्वर- 751001

विषयः हिन्दी ई- पत्रिका वातायन के 99वें अंक का प्रेषण के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी ई-पत्रिका वातायन के 99वें अंक की प्राप्ति हुई है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण, पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक है। साथ-ही पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षणीय है। कविताएँ एवं लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्जवल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

भवदीय,

व.लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष

सी.जी.ओ.कम्प्लेक्स,डी.एफ.ब्लॉक, साल्टलेक,कोलकाता-700 064
3rd MSO Building, 5th Floor, CGO Complex, DF Block, Salt Lake, Kolkata – 700 064.
Phone: (033) 2337-4916; FAX: (033) 2337-7854, e-mail:agauwestbengal2@cag.gov.in

पाठकों की पाती

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), उत्तराखण्ड
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT), UTTARAKHAND

पत्रांक:हिन्दी/सामान्य-विविध/25/2018-2019/145
दिनांक: 26 .02.2021

सेवा में,

10643 वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी /हिन्दी
कार्यालय, प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
केसरी नगर, ओडिशा, भुवनेश्वर- 751001

विषय: हिन्दी ई- पत्रिका "वातायन" के निन्यानवें अंक की पावती के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके द्वारा प्रेषित हिन्दी अर्ध-वार्षिक ई-पत्रिका **"वातायन"** के निन्यानवें अंक की प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का अंक बेहद ज्ञानवर्धक एवं आकर्षक है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं साज-सज्जा अति मनमोहक है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं सारगर्भित, उच्च स्तरीय एवं बेमिसाल हैं। इनमें से जो रचनाएं अति उत्तम लगीं, वो हैं - "बुढ़ापे की लाठी", "कलयुगी रिश्तों की हकीकत", "बदलते रिश्ते", "साथी" एवं "हानिकारक सोशल मीडिया" आदि।

पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में सहायक होते हुए कर्मचारियों को अभिव्यक्ति का मंच भी उपलब्ध करवा रही हैं। आशा है कि भविष्य में भी पत्रिका **"वातायन"** राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिंदी मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी। इससे सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रति लोगों में निश्चित ही प्रेरणा और उत्साह का संचार होगा। पत्रिका **"वातायन"** की निरंतर प्रगति एवं सफलता के लिए पत्रिका समूह के संपादन एवं प्रकाशन मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई।

भवदीय

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

'महालेखाकार भवन', कौलागढ़, देहरादून - 248195 'Mahalekhakar Bhawan', Kaulagarh, Dehradun - 248195
दूरभाष / Phone : 0135 - 2970870 फैक्स / Fax : 0135 - 2970871, ई-मेल / E-mail : agauttarakhand@cag.gov.in

---

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम उ0प्र0, इलाहाबाद
Office of the Accountant General (Accounts & Entitlement)-I, U.P., Allahabad

प०सं० हि०अ०/पत्रिका/ 76990
दिनांक: 19.01.2021

सेवा में,

हिन्दी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
ओडिशा, भुवनेश्वर- 751001

विषय: राजभाषा पत्रिका "वातायन" के 98वें अंक की प्राप्ति एवं प्रतिक्रिया।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित राजभाषा पत्रिका "वातायन " के 98वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का मुद्रण एवं प्रकाशन उत्तम है। आवरण पृष्ठ बहुत सुंदर एवं आकर्षक है। संकलित समस्त लेख एवं रचनाएँ सरस एवं पठनीय हैं। विशेषकर कुमारी बबिता मणि **(सिर्फ कपड़े ही नहीं सोच भी ब्रांडेड होनी चाहिए)**, श्री शुकांत कुमार महांति **(नैतिक मूल्य और आध्यात्मिकता का महत्व)**, श्रीमती शांतिलता सेठी **(मेरी तमन्ना)**, श्री दिनमणि मल्लिक **(साभार)**, श्री रवीद्र नाथ चांद **(ललकार)** एवं सुश्री रूपा नीलमणि एक्का **(फनी)** आदि की रचनाएं काफी रोचक एवं उल्लेखनीय हैं।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मण्डल के सभी सदस्य बधाई के पात्र हैं। पत्रिका इसी प्रकार निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, यह हमारी शुभकामना है।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखाधिकारी/हिन्दी

20, सरोजनी नायडू मार्ग, इलाहाबाद - 211001 दूरभाष : 2622625, 2622626, 2622628, 2623353, 2623354 फैक्स : 2532 - 2424740
20, Sarojini Naidu Marg, Allahabad - 211001 Phone : 2622625, 2622626, 2622628, 2623353, 2623354 Fax : 0532 - 2424740

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, तीसरी मंजिल, उत्तर खंड
भुवनेश्वर -751017 (ओड़िशा)

स.- रा.भा.अ./पत्रिका/2020/28 दिनांक-03.03.2021

सेवा में,
वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
सचिवालय मार्ग, एजी चौक,
भुवनेश्वर -751001

विषय- ई-पत्रिका **"वातायन"** के **99वें** अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी ई-पत्रिका **"वातायन"** का **99वाँ** अंक प्राप्त हुआ। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर व रुपरेखा अत्यधिक आकर्षक है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और रोचक हैं, विशेषकर निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएँ हमारे विचार से प्रशंसनीय हैं:-

क्रम	रचनाकार	रचनाएँ
1.	श्री दिनमणि मल्लिक, वरिष्ठ उपमहालेखाकार	पगली माँ
2.	डॉ. नंद दुलाल दास,उपमहालेखाकार	एक ब्लैक फ्राईडे था
3.	श्री रबीन्द्र नाथ चाँद, हिन्दी अधिकारी	साथी
4.	श्री सुन्दर लाल साव, कनिष्ठ अनुवादक	बदलते रिश्ते

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

(दीपक कुमार दास)
वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी/राजभाषा

दूरभाष सं.-0674-2303511 ई-मेल- pdarlyecoastr@cag.gov.in

हिन्दी के प्रयोग बढ़ाने के लिए आवश्यक सुझाव

- ☞ उपस्थिति पंजी में हस्ताक्षर एवं सहकर्मियों से वार्तालाप हिन्दी में करें।
- ☞ फाइलों पर विषय अनिवार्य रुप से हिन्दी या द्विभाषी में लिखें।
- ☞ कम्पयूटरों में यूनिकोड/देवनागरी लिपि का प्रयोग करें।
- ☞ धारा 3(3) से संबंधित कागजात हिन्दी/द्विभाषी में ही जारी करें।
- ☞ हिन्दी में प्राप्त पत्रों के जवाब अनिवार्यतः हिन्दी में देवें।
- ☞ सभी फाइल कवर, पत्र शीर्ष, नामपट्ट, साईनबोर्ड व रबर स्टाम्प द्विभाषी में उपयोग करें।
- ☞ मानक मसौदे एवं प्रपत्र केवल हिन्दी/द्विभाषी में प्रयोग करें।
- ☞ हिन्दी न जानने वालों को हिन्दी सीखने में सहयोग, प्रोत्साहन व मार्गदर्शन देवें।